₹ 15

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

मई 2011

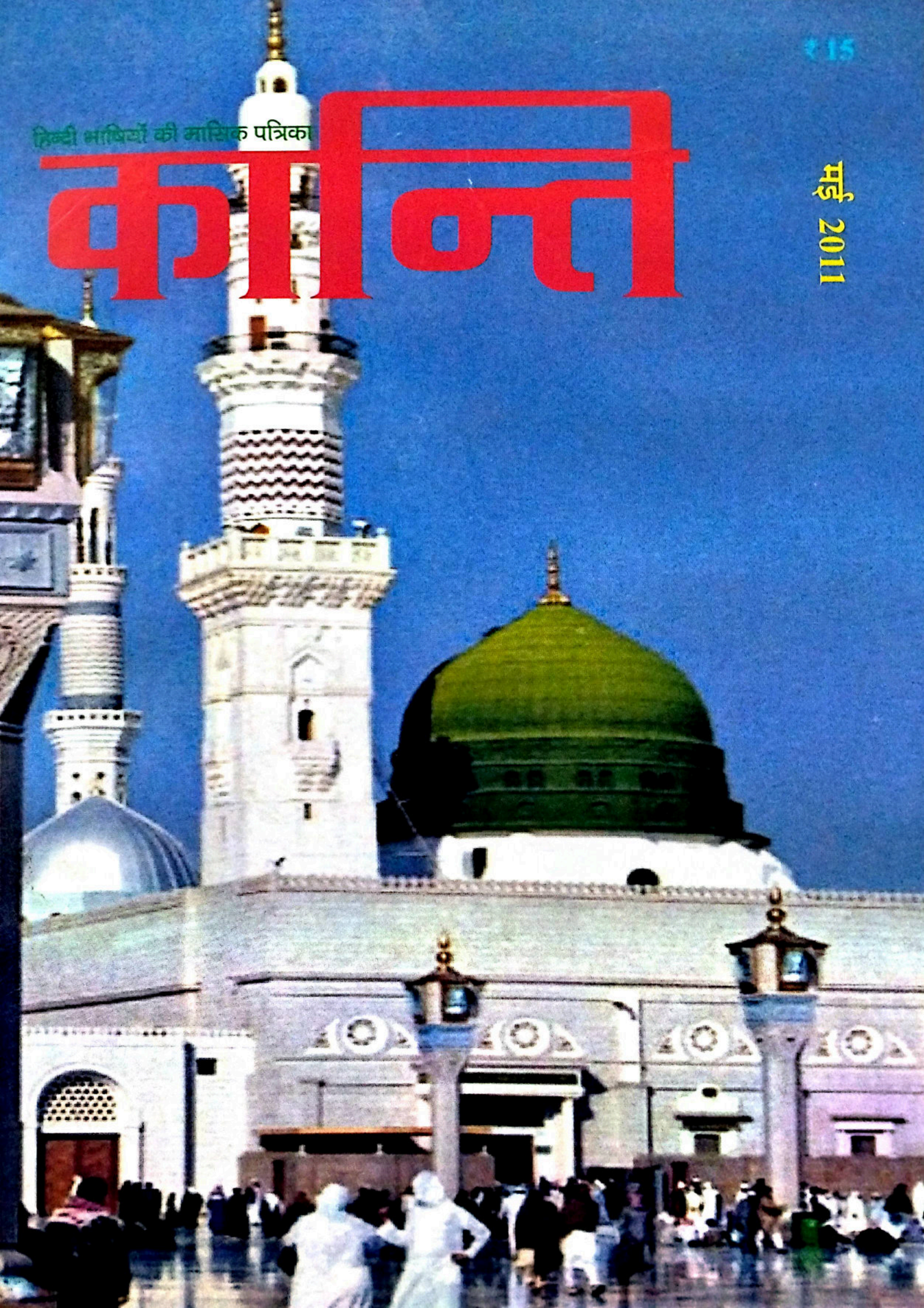

इस्लामिया अरबिक कॉलेज

ISLAMIA ARABIC COLLEGE

(Residential School, रेजिडेंशियल स्कूल)

मंसूर एजूकेशनल एंड वेलफेयर ट्रस्ट के अन्तर्गत

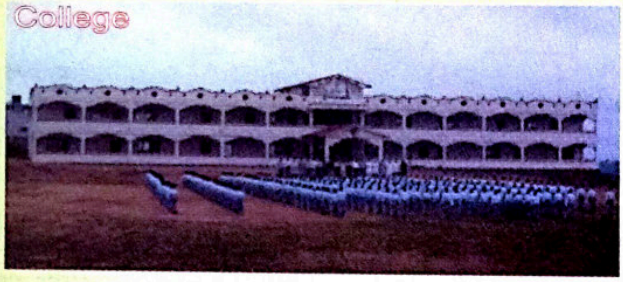

दीनी और आधुनिक शिक्षा का सुन्दर संगम

इस्लामिया अरबिक कॉलेज, दक्षिण भारत का अनोखा रेजिडेंशियल स्कूल है, जहां देश के विभिन्न राज्यों के छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आधुनिक शिक्षा (पांचवीं से दसवीं कक्षा तक) के साथ-साथ दीनी शिक्षा में सानविया (मौलवी) तक की शिक्षा दी जाती है।

शिक्षा का उद्देश्य

- छात्रों को किताब व सुन्नत की तालीम देना।
- आधुनिक शिक्षा देना • मोमिनाना बसीरत पैदा करना।
- इक़ामते दीन के फ़रीज़े के लिए तैयार करना।
- अल्लाह का मुख़लिस बन्दा और देश का एक अच्छा नागरिक बनाना।



उपलब्ध सुविधाएं

विस्तृत कैम्पस, सुखद और शांत वातावरण में उच्च स्तरीय शिक्षा प्रशिक्षण, हॉस्टल, मस्जिद, लाइब्रेरी, कंप्यूटर लैब, कराटे की शिक्षा, खेल-कूद के लिए बड़ा मैदान, दावती काम के लिए लिखत व मौखिक अभ्यास, सभी विभागों के लिए योग्य, अनुभवी और मेहनती शिक्षक।

दाख़िले की शर्तें

- छात्र की उम्र 11 वर्ष से अधिक न हो।
- पांचवीं कक्षा पास हो।
- नाज़रा क़ुरआन मजीद पढ़ सकता हो।
- हमारी प्रवेश परीक्षा में सफल हो।

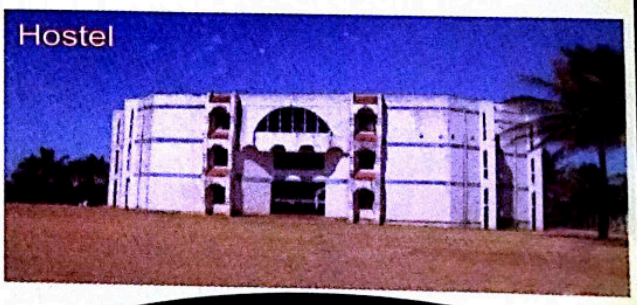

एक जून से शिक्षा वर्ष का आरंभ होता है
प्रवेश परीक्षाएं मई के महीने में होती है।

रजिस्ट्रेशन और अन्य जानकारियों के लिए संपर्क करें :

ताहिर हुसैन (सेक्रेट्री)
09445475006

मनव्वर पाशा
09986846146

Islamia Arabic College,Mansoora, Post ALUR.573213,Dist:Hassan,Karnataka
Ph:08170-218320,9341995959,E.mail:secmansoora@rediffmail.com
Website:www.iacmansoora.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 20 अंक 11 मई 2011

कह दो : मैं तो तुम्हीं जैसा एक मनुष्य हूं । मेरी ओर प्रकाशना की जाती है कि तुम्हारा पूज्य प्रभु बस अकेला पूज्य प्रभु है । अतः तुम सीधे उसी का रुख़ करो और उसी से क्षमा-याचना करो । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

फोन–(011)–26949430

ई मेल kantimasik@gmail.com

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 15/- विशेषांक रु० 25/-

वार्षिक रु० 160/-

दो वर्ष 300/- पांच वर्ष 700/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–60 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–25 US डॉलर

नोट–चेक / ड्राफ्ट 'मासिक कान्ति' के नाम से बनवाएं

नअत

क्या बताए कोई मर्तबा आपका
मद्हख़्वां है ख़ुदा, मुस्तफ़ा आपका

फ़तहे-मक्का भी एक मोजिज़ा आपका
कुफ़्र मुंह देखता रह गया आपका

रहबरी है तो बस रहबरी आपकी
रास्ता है तो बस रास्ता आपका

उम्मते-मुस्लिमा कुछ मक़ामी नहीं
कायनाती है यह दायरा आपका

आपको क़त्ल करने जो आया था वह
आपको देखकर हो गया आपका

आज की उलझनों में फंसी ज़िन्दगी
पूछती फिर रही है पता आपका

देख लो मुंह के बल गिर पड़ा वह निज़ाम
जो उड़ाता रहा मुज़हका आपका

एक लम्हा न ठहरेंगे झूठे नबी
नाम तो लीजिएगा ज़रा आपका

आपकी नुक्तासंजी से ऐसा लगा
मस्अले मानते हैं कहा आपका

एक कसक एक तड़प मांगता है 'हफ़ीज़'
दे के अल्लाह को वास्ता आपका

● हफ़ीज़ मेरठी



कहां क्या है ?

नअत	–हफ़ीज़ मेरठी	3
क़ुरआन ज्योति		5
हदीस मंजरी		6
अण्णा की आवाज़, सबकी आवाज़ (संपादकीय)		7
पाश्चात्य सभ्यता का युवा वर्ग पर प्रभाव (आपके पत्र)		8
हज़रत सुहैला बिन्त मसऊद रज़ि० (नेकी के सिपाही)	–तालिब हाशमी	11
इस्लाम का अध्ययन क्यों करें	–संपादन प्रभाग	13
मूर्तिपूजा : सर्वथा अवैदिक और त्याज्य	–कामता प्रसाद मिश्र	17
इस्लाम में न्याय और उदारता	–मुस्तफ़ा हस्नी अस्सबाई	21
पढ़ने का तरीक़ा भी महत्वपूर्ण (कैरियर)		25
मानवता के आदर्श हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)	–माहिरुल क़ादिरी	26-27
वास्तविक क्रान्ति दूत	–डॉ० ए० सेप्पन	39
विश्वसनीय व्यक्तित्व	–के० एस० रामकृष्ण राव	45



(13) यह इसलिए कि उन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाबला किया, और जो अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाबला करे, अल्लाह उसके लिए बड़ी कड़ी पकड़ करने वाला है[11]–(14) यह है[12] तुम लोगों की सज़ा, अब इसका मज़ा चखो और तुम्हें मालूम हो कि सत्य का इन्कार करने वालों के लिए जहन्नम का अज़ाब है ।

(15) ऐ लोगो जो ईमान लाए हो ! जब तुम्हारा एक सेना के रूप में इन्कारियों (शत्रुओं) से मुक़ाबला हो तो उनके मुक़ाबले में पीठ न फेरो । (16) जिसने ऐसे अवसर पर पीठ फेरी-अलावा इसके कि युद्ध-चाल के रूप में ऐसा करे या किसी दूसरी सेना से जा मिलने के लिए–तो वह अल्लाह के प्रकोप में घिर जाएगा । उसका ठिकाना जहन्नम होगा और वह पलटने की बहुत बुरी जगह है ।[13] –क़ुरआन, 8 : 13-16

11. यहां तक बद्र की लड़ाई की जिन घटनाओं को एक-एक करके याद दिलाया गया है, इसका उद्देश्य वास्तव में शब्द 'अनफ़ाल' की सार्थकता स्पष्ट करना है । आरंभ में कहा गया था कि ग़नीमत के इस माल को अपनी वीरता का फल समझकर उसके मालिक व मुख़्तार कहां बने जाते हो, यह तो वास्तव में अल्लाह की देन है और दाता स्वयं ही अपने माल का स्वामी है । अब इसके प्रमाण में ये घटनाएं गिनायी गयी हैं कि इस विजय में तुम स्वयं ही हिसाब लगाकर देख लो कि तुम्हारी अपनी मेहनत, वीरता और साहस का कितना भाग था और अल्लाह की कृपा का कितना भाग । इसलिए इसका निर्णय करना कि यह कैसे बांटा जाए, तुम्हारा नहीं बल्कि अल्लाह का काम है ।

12. इस वाक्य में क़ुरैश के शत्रुओं को सम्बोधित किया गया है जिनकी बद्र में पराजय हुई थी और जिनके सज़ा का पात्र होने का उल्लेख ऊपर के वाक्य में हुआ था ।

13. शत्रु के ज़बरदस्त दबाव पर व्यवस्थित रूप से पीछे हटना (Orderly retreat) अवैध नहीं है, जबकि इसका उद्देश्य अपने पीछे वाले केन्द्र की ओर पलटना या अपनी ही सेना के किसी दूसरे भाग से जा मिलना हो । अलबत्ता जो चीज़ हराम की गयी है वह भगदड़ (Rout) है जो किसी सामरिक उद्देश्य के लिए नहीं, बल्कि मात्र भीरुता और पराजित भावना के कारण होती है और इसलिए हुआ करती है कि भगोड़े आदमी को अपने उद्देश्य की अपेक्षा जान अधिक प्यारी होती है । इस भागने को महापापों में सम्मिलित किया गया है । चुनांचे नबी (सल्ल०) फ़रमाते हैं कि तीन पाप ऐसे हैं कि उनके साथ कोई नेकी फ़ायदा नहीं देती । एक शिर्क (अनेकेश्वरवाद), दूसरे मां-बाप के हक़ मारना, तीसरे अल्लाह के रास्ते में किये जा रहे युद्ध के क्षेत्र से भागना । इसी तरह एक और हदीस में आपने सात बड़े पापों का उल्लेख किया है जो इन्सान के लिए विनाशक और आख़िरत में उसके अंजाम के लिए तबाही लाने वाले हैं । उनमें से एक यह गुनाह भी है कि आदमी कुफ़्र और इस्लाम की लड़ाई में शत्रुओं के सामने पीठ दिखाकर भागे । इस कार्य को इतना बड़ा पाप कहने का केवल यही कारण नहीं है कि यह एक भीरुतापूर्ण कार्य है, बल्कि इसका कारण यह है कि एक व्यक्ति का भगोड़ापन कभी-कभी एक पूरी पलटन को और एक पलटन का भगोड़ापन एक पूरी सेना को बदहवास करके भगा देता है और फिर जब एक बार किसी सेना में भगदड़ मच जाए तो कहा नहीं जा सकता कि विनाश किस सीमा पर जाकर रुकेगा । इस तरह की भगदड़ केवल सेना ही के लिए विनाशकारी नहीं है, बल्कि उस देश के लिए भी विनाशकारी है जिसकी सेना ऐसी पराजय का मुंह देखे ।

पवित्र क़ुरआन
को इंटरनेट पर पढ़िए
www.quranhindi.com

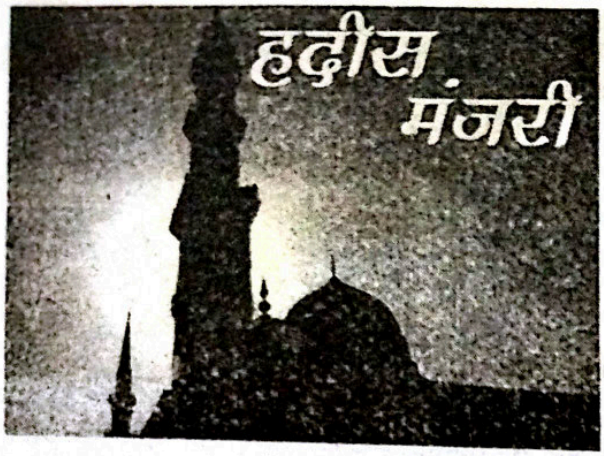

कृपणता और लोभ का निषेध

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "ज़ुल्म से बचो क्योंकि ज़ुल्म क़ियामत के दिन अंधेरों का रूप धारण कर लेगा और लोभ एवं कृपणता से बचो क्योंकि लोभ और कृपणता ने ही उन लोगों को विनष्ट किया जो तुमसे पहले थे । इसने उन्हें इस पर उभारा कि वे अपनों का रक्तपात करें और हराम को हलाल ठहरा लें ।"

–मुस्लिम

त्याग और सहानुभूति

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) कहते हैं कि एक व्यक्ति नबी (सल्ल॰) के पास आया और कहा कि मैं बहुत भूखा और बदहाल हूं । आपने अपनी किसी स्त्री के पास कहला भेजा (कुछ खाना हो तो भेज दो) तो उन्होंने कहा : उसकी क़सम जिसने आपको सत्य के साथ भेजा है, मेरे पास पानी के अतिरिक्त कुछ नहीं है । फिर आपने दूसरी के यहां कहला भेजा । उन्होंने भी इसी तरह का जवाब दिया यहां तक कि सबने यही जवाब दिया कि नहीं, उसकी क़सम जिसने आपको सत्य के साथ भेजा, मेरे पास पानी के अतिरिक्त कुछ नहीं है । इस पर नबी (सल्ल॰) ने कहा : "कौन व्यक्ति आज रात इसकी मेहमानदारी करेगा ?" अंसार में से एक व्यक्ति ने कहा : मैं ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), फिर वह उसे लेकर अपने घर चला गया । उसने अपनी स्त्री से कहा : अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के मेहमान का आदर-सत्कार करो ।

और एक रिवायत में है कि उसने अपनी स्त्री से कहा कि क्या तुम्हारे पास कुछ मौजूद है ? उसने कहा : नहीं, सिवाय बच्चों के खाने के । अंसारी ने कहा : बच्चों को किसी चीज़ से बहला लो और जब वे रात्रि का भोजन करना चाहें, तो उन्हें सुला दो और जब हमारा मेहमान भीतर आये तो चिराग़ बुझा देना और उस पर यह ज़ाहिर करना कि हम खा रहे हैं । फिर वे बैठे और मेहमान ने खाना खाया और उन दोनों ने रात भूख की हालत में व्यतीत की । जब सुबह हुई, तो वह नबी (सल्ल॰) की सेवा में उपस्थित हुआ, तो आपने कहा : 'अल्लाह को बहुत प्रिय लगा वह व्यवहार जो तुम दोनों ने अपने मेहमान के साथ किया ।'

–बुख़ारी, मुस्लिम

कृतज्ञ धनवान की श्रेष्ठता

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "दो ही व्यक्ति इस योग्य हैं जिनके प्रति स्पर्धा की जाए : एक वह व्यक्ति जिसको अल्लाह ने माल दिया और उसे इसकी सामर्थ्य दी कि वह उसे सही कार्य में ख़र्च करे । और एक वह व्यक्ति जिसको अल्लाह ने प्रज्ञा और विवेक प्रदान किया और वह उसके द्वारा फ़ैसला करे और (लोगों को) उसकी शिक्षा दे ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत इब्न उमर (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "दो ही व्यक्ति इस योग्य हैं जिनके प्रति स्पर्धा की जाए : एक वह व्यक्ति जिसको अल्लाह ने क़ुरआन दिया और वह दिन-रात की घड़ियां उसी के साथ व्यतीत करे । और दूसरा वह व्यक्ति जिसको अल्लाह ने माल दिया और वह दिन-रात की घड़ियों में उसे (सत्य-मार्ग में) ख़र्च करे ।"

–बुख़ारी, मुस्लिम

(रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय
हिन्दी वेबसाइटें
www.islamdharma.org
www.islamicwebdunia.com
www.islamic-videos.com

संपादकीय

अण्णा की आवाज़, सबकी आवाज़

यह बात सही है कि स्वतंत्र भारत में पहली बार प्रबल रूप से भ्रष्टाचार विरोधी स्वर गुंजायमान हुआ । दिल्ली के जन्तर-मन्तर पर वयोवृद्ध गांधीवादी समाजसेवी किशन बाबूराव हज़ारे (अण्णा हज़ारे) ने विगत 6 अप्रैल को ज्यों ही आमरण अनशन की शुरुआत की, पूरे देश में चेतना-लहर फैल गयी । सभी चाहने लगे कि भ्रष्टाचार का अंत हो तत्काल-तत्क्षण । अपार जन-समर्थन के आगे केन्द्र सरकार को अण्णा की मांगें माननी पड़ीं, इसलिए उन्होंने 9 अप्रैल को 97 घंटे के अनशन के बाद नींबू-पानी पी लिया । सरकार ने लोकपाल विधेयक में व्यापक संशोधन के लिए अधिसूचना जारी कर दी है, इस विधेयक का प्रारूप फिर से तैयार करने के लिए मंत्रियों और समाज के प्रबुद्ध-समाजसेवी जनों की संयुक्त समिति के गठन की अधिसूचना जारी कर दी है । आशा की जानी चाहिए कि सशक्त और सक्षम लोकपाल का पद जल्द से जल्द सृजित होगा और इस बाबत 15 अगस्त 2011 तक क़ानून बन जाएगा । अण्णा ने चेतावनी भी दी है कि यदि उक्त तिथि तक क़ानून नहीं बना, तो फिर आमरण अनशन की शुरुआत होगी । वे काफ़ी आशावान हैं कि यदि उनके मतानुसार लोकपाल पद का सृजन हो जाएगा, तो देश में 90 प्रतिशत भ्रष्टाचार समाप्त हो जाएगा । शेष 10 प्रतिशत के लिए बस कुछ ही प्रयास करने होंगे । अण्णा की यह बात वास्तविकता से परे लगती है, लेकिन है यह पूरी तरह गांधीवादी विचार । गांधीजी ने कहा था कि जब जनता नेताओं से हिसाब मांगने लगे, तो समझिए कि भ्रष्टाचार सीमित हो जाएगा । वास्तव में हमारे देश में भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी गहरी हैं कि एक-दो अभियान से इसका उन्मूलन कदापि नहीं होगा, बल्कि इसके लिए सतत प्रयास की ज़रूरत है । फिर दो स्तरों पर प्रयास करना होगा-जनचेतना जगानी होगी और जन-मानसिकता में वांछित बदलाव लाना पड़ेगा । क़ानून व प्रावधान पर तभी ठीक से अमल हो सकता है, जब मानसिकता में सकारात्मक परिवर्तन आये ।

भ्रष्टाचारमयी देश में अण्णा की 'आवाज़' बड़ी सराहनीय है । वे धन्यवाद के पात्र हैं कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध एक बड़ा अभियान छेड़ा है । उन्होंने संकल्प व्यक्त किया है कि अब वे जन-समस्याओं को लेकर पूरे देश में भ्रमण करते रहेंगे और भ्रष्टाचार को समाप्त करने के लिए हर संभव क़दम उठाएंगे । 73 वर्षीय अण्णा ने लोकपाल विधेयक के प्रारूप हेतु जारी समिति के गठन की अधिसूचना को देश की बड़ी जीत बताते हुए कहा कि अक्षम और नाकारा जनप्रतिनिधियों की सदस्यता ख़त्म कर उन्हें वापस बुलाने के लिए 'राइट टू कॉल' के लिए आगे 'लंबी लड़ाई' लड़ी जाएगी । उन्होंने कहा कि कोई सांसद, विधायक या पार्षद यदि जनता से पूछे बिना धन-राशि व्यय करता है तो लोगों को उसे वापस बुलाने का अधिकार होना चाहिए । अण्णा ने यह भी कहा कि यह तो केवल शुरुआत है । आगे की लड़ाई बाक़ी है । यह दूसरा स्वाधीनता आन्दोलन है । यदि भगत सिंह ने ब्रिटिश को देश छोड़ने के लिए विवश कर दिया था, तो आज हमें उन 'काले अंग्रेज़ों' के ख़िलाफ़ वैसा ही रवैया अपनाना पड़ेगा, जो हम पर शासन कर रहे हैं । बहरहाल अण्णा ने यह भी कह दिया कि नरेन्द्र मोदी और नीतीश कुमार दोनों अपने-अपने राज्यों में सुदूर क्षेत्रों तक विकास-कार्य में लगे हैं । शायद उन्हें वास्तविकता का पता नहीं है । गुजरात और बिहार में उतना विकास-कार्य नहीं हो रहा है, जितने की चर्चा है । सारा प्रचार-तंत्र का तिलिस्म है, जिससे अण्णा वास्तविकता से परिचित नहीं हो पा रहे हैं । जब वे इन राज्यों के गांवों-क़स्बों में पहुंचेंगे, वास्तविकता का भान हो सकेगा । भ्रष्टाचार विरोधियों ने गांवों, क़स्बों में 'पोल-खोल' समितियां बनाने का फ़ैसला किया है । अण्णा चाहते हैं कि निचले स्तर पर भी इस प्रकार के प्रयास हों और ज़िले-ब्लॉक स्तर पर समितियां बनें, जो भ्रष्टाचारियों-रिश्वतख़ोरों की दबिश करें । निश्चय ही, भ्रष्टाचार के विरुद्ध यह प्रयास और संकल्प सराहनीय एवं स्वागत योग्य है । पग-पग पर भ्रष्टाचार से जूझती जनता को इससे त्राण दिलाने के लिए सर्वजन साझा-प्रयास की आवश्यकता है ।

पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति का युवा वर्ग पर प्रभाव

सकारात्मक सोच के कारण ही युवा वर्ग राष्ट्र निर्माण का सुचारू रूप से प्रयोग कर सकता है । पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति के हावी होने के कारण युवा वर्ग दिग्भ्रमित होता जा रहा है । भारत को स्वतंत्र हुए छह दशक से अधिक समय बीत गया है । देश की आधी से अधिक जनसंख्या युवाओं की है, जिनकी आयु चालीस वर्ष के भीतर है । युवा वह शक्ति है, जिसमें असीम शक्तियों का प्रवाह होता है । प्रतिभा पराकाष्ठा पर होती है और बलिदानी साहस सामाजिक आर्थिक, शारीरिक, मानसिक सभी रूपों में सर्वाधिक सक्रिय रहती है । यह एक ऐसा समय है कि युवा वर्ग को खुले रूप में चुनौती देता है । परन्तु पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति का प्रभाव वर्तमान युग में युवा वर्ग पर इतना हावी हो गया है कि उनके आचार-विचार, खान-पान, रहन-सहन आदि में बड़े परिवर्तन हो गये हैं । वे व्यसन और व्याभिचार का शिकार हो रहे हैं । धर्म, जाति, सम्प्रदाय के नाम पर वे हिंसक, अशिष्ट और उच्छृंखल होते जा रहे हैं ।

21वीं सदी का सपनों का भारत बनाने में अहम युवा वर्ग की सोच नकारात्मक है । प्रश्न यह उठता है कि बुजुर्ग वर्ग ने युवाओं के इस हालात पर ग़ौर किया । आज का युवा अधिकांश चिंतारहित, अलमस्त व अपनी मनमानी करने वाला बन रहा है हमने युवा पीढ़ी को क्या संस्कार दिया, यह सब सोचने के प्रमुख बिन्दु हैं । देश को 64 वर्ष हो गये आज़ाद हुए परन्तु भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता का नंगा नाच, अयोग्य राजनेता, राजनीतिक जातिवाद, आरक्षण की आग, अपराधियों का राजनीतिकरण आदि बढ़ता जा रहा है ।

वर्तमान शिक्षा प्रणाली का दूषित रूप होने के कारण आज हम युवा को नौकरी के लिए भटकते, अपराध करते, यौन कुंठाओं से ग्रस्त, मारामारी और दादागीरी करते देखते हैं तो क्या ग़लत हैं । अधिकांश माता-पिता धन पिपासा में समय व्यतीत करने के कारण अपनी संतान पर पूरातिया ध्यान नहीं दे पा रहे हैं तथा उनको यह ध्यान नहीं है कि उनकी संतान अमूल्य समय को किस कार्य में दुरुपयोग कर रही है । उदाहरण के लिए टी०वी० व मोबाइल संस्कृति द्वारा पुरातन भारतीय सभ्यता व संस्कृति का ह्रास करने में युवा वर्ग अपना समय व्यतीत कर रहे हैं । इन्हीं के कारण युवा वर्ग ग़लत रास्ते में भटक रहा है युवा वर्ग में संकुचित विचारधारा बढ़ती जा रही है । अपने परिवार व समाज में दादा-दादी, माता-पिता व अन्य का आदर करने का ध्यान नहीं है ।

दुख तो इस बात का है कि छोटे शहर की लड़कियां भी अपने आपको तथाकथित मॉडर्न कहलवाने की चाह में किस स्तर तक पहुंच गयी हैं । आये दिन रेस्त्रां में लड़के-लड़कियां का आना-जाना आम बात है । बड़ों ने इस पर ध्यान नहीं दिया, यदि दिया भी हो, कहा हो तो देखा गया कि युवापीढ़ी में सहन-शक्ति का अभाव है तथा भय नहीं है । कोल्ड ड्रिंक में शराब मिलाकर पीना वर्तमान में अधिकांश युवा पीढ़ी के लिए फैशन का विषय बन गया है । आये दिन फ़िल्मों और टी०वी० धारावाहिकों में अश्लीलता, सेक्स, विवाहेत्तर संबंधों की कहानियां युवा मन को भ्रमित कर रही हैं युवा वर्ग मानसिक परेशानियों को दूर करने के लिए शराब, जुआ, सट्टा आदि यहां तक कि आत्महत्या का शिकार हो रहे हैं । युवाओं में मानवीय मूल्यों की जानकारी बराबर देते रहना चाहिए । हमारे समाज को युवा पीढ़ी के प्रति उदारता दिखाते हुए सहयोग करना चाहिए, ताकि सपनों के भारत का निर्माण हो सके तथा फिर से देश सोने की चिड़िया कहलाए ।

रामस्वरूप झंवर
शास्त्रीनगर विस्तार, भीलवाड़ा (राज०)

नग्नता क्यों ?

टी०वी० अख़बार और सरकार सभी रात दिन गीत गा रहे हैं कि नारी उन्नति कर रही है, नारी का विकास हो रहा है, बेटियां पढ़ रही हैं, आगे बढ़ रही हैं ।

अगर वाक़ई ऐसा हो रहा है, शायद कुछ हो भी रहा है, तो यह तो बहुत ही अच्छी बात है, इसमें तो किसी को कोई एतिराज़ होना ही नहीं चाहिए और हमें तो है भी नहीं, लेकिन एक भारी उलझन है—लड़कियों के मानसिक विकास का तो

पता नहीं कुछ हुआ भी है या नहीं ? लेकिन इनका शारीरिक विकास ज़रूर हो गया दिखता है । दिखता इसलिए है क्योंकि वे दिखाती हैं–भरसक अधिकाधिक वस्त्र उतारकर या ऐसे स्किन फिट कपड़े पहनकर बस्ती बाज़ार में ही नहीं बल्कि स्कूल, कॉलेज और मंदिरों में भी आती-जाती हैं कि अंधों को भी उनके उभार, उनका दिन-प्रतिदिन होता शारीरिक विकास सहज और साफ़ तौर पर दिखायी दे ।

शायद कुल मिलाकर इक्कीसवीं सदी में उनका सिर्फ़ इतना ही विकास हुआ है या शायद उनके लिए मानसिक विकास की यह अनिवार्य शर्त है कि पहले अधिकाधिक नग्न हुआ जाए । लेकिन ऐसा है तो क्यों है ? पहले तो ऐसा नहीं था इस देश में पहले तो किसी बड़ी डिग्री या बड़ा पद पाने के लिए डॉक्टर/इंजीनियर/वैज्ञानिक बड़ी उद्योगपति तो क्या प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति बन जाने तक के लिए भी कभी सार्वजनिक रूप से अंग प्रदर्शन की ज़रूरत नहीं पड़ी फिर अब ये और कौन-सी बड़ी उपलब्धि हासिल करने के लिए नंगी हुई जा रही हैं ? समझना मुश्किल है ।

क्योंकि यदि 21वीं सदी विकास की अनिवार्य शर्त है भी तो सिर्फ़ लड़कियों के लिए ही क्यों है ? देश का पुरुष वर्ग लड़के तो आज भी पूरे कपड़े पहनने के बावजूद बड़ी-बड़ी डिग्रियां, बड़े-बड़े पद हासिल कर रहा है । जब बिना नंगा हुए उनका दिमाग़ काम करता रह सकता है तो नारी को, लड़कियों को बिना अंग उघारे पढ़ाई समझ में क्यों नहीं आ सकती ?

कहीं ऐसा तो नहीं कि पढ़ाई और विकास तो बहाना है अस्ली लक्ष्य तो कुछ और ही पाना है ?

संपादक, 'तुमुल तूफ़ानी'

बड़ा बाज़ार, चन्दौसी, उ०प्र० (सा०)

अप्रतिबंधित अश्लीलता

नागपुर, महाराष्ट्र में घटित दर्दनाक मोनिका हत्याकांड में उपस्थित जनसमुदाय में से किसी ने भी उसके द्वारा अंतिम क्षणों में पानी मांगने पर पानी नहीं पिलाया । अतिरिक्त इसके कोई मानवता भी नहीं दिखायी गयी । उसको मरते देख जनसमुदाय की ऐसी कठोर कार्रवाई सोचने पर हमें विवश करती है । लगता है मृतका के संबंध में उन्हें अवश्य ही ऐसी कोई जानकारी होगी जो बदले की भावना के रूप में सामने आयी ।

आमतौर पर छात्राओं तथा युवतियों में निर्लज्जा के साथ दो से अधिक अनैतिक प्रेमजाल के संबंध बड़े पैमाने पर चल रहे हैं । अर्धनग्न परिधान, अंग प्रदर्शन तथा अश्लील कार्यशैलियों से उनके दोस्त तथा दुश्मन मिनटों में बन रहे हैं । वहीं दूसरी ओर उनकी अदाओं से पुरुष वर्ग दीवाना बनकर एकपक्षीय प्रेमजाल के चक्कर में फंस रहा है । देखा जाए तो युवा पीढ़ी कुमार्ग की ओर जाकर जान लेने-देने में ही अपना भला समझ रही है ।

अत: निदान स्वरूप उनमें लज्जा तथा मानमर्यादाओं वाले नैतिक जीवन का विकास किया जाना चाहिए जिनमें (1) वे अपनी नज़रें बचाकर रखें (2) अपने गुप्तांगों की रक्षा करें (3) बनाव शृंगार को उजागर न करें (4) वक्ष स्थलों पर ओढ़नियों का आंचल डालें (5) ढीले-ढाले परिधान का व्यवहार करें (6) पुरुष तथा लड़कों से दूरी बनाएं (7) कॉलेज एवं ट्यूशन में लड़कों से नोट्स आदि लेने में सावधान रहें (8) मोबाइल फ़ोन आदि के प्रयोग पर नियंत्रण रखें । इन सावधानियों को अपना कर ही ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोका जा सकता है ।

मलिक

नागपुर

शुभकामना

आपका रिसाला 'कान्ति' मार्च 2011 मिला । शुक्रगुज़ार हूं कि आपने हमें याद किया । हिन्दी लिपि में इस्लाम की बातें बहुत लोगों तक पहुंचेंगी जिससे जो एक गैप बन गया है उसे कम कर सकेंगी, ऐसी मेरी ऊपर वाले से दुआ है । उम्र के 80 वर्ष पूरे कर लेने के बाद क़ुदरत आशीर्वाद का हक़ दे देती है । उसी हक़ से 'कान्ति' के निरंतर विकास के लिए हमारे आशीर्वाद हैं ।

आपने बहुत सुन्दर सामग्री का चयन किया है । ''चहचहाने का सबक़'' ने दिल को छू लिया । लेखक को हमारी बधाई । काश ! यदि घोटालेबाज़ इससे सबक़ लें तो भारत का नक़्शा ही बदल जाएगा ।

हमने अपने 50 साल के लेखन में क़ानून और व्यंग्य पर लगभग 26 पुस्तकें लिखी हैं । ख़ासकर महिला क़ानून पर हमारे 2 रिसर्च प्रोजेक्ट हैं जिनके कई संस्करण शाया हो चुके हैं । हमारी दुआ है कि आपके संपादन में नित्य निखार आये और आपका नाम जाने-माने संपादकों में आये ।

सुधारानी श्रीवास्तव

208/2, गढ़फाटक जबलपुर (म०प्र०)

निष्पक्ष हो फ़ैसला

गुजरात के गोधराकांड का फ़ैसला अहमदाबाद की विशेष अदालत ने सुना दिया है, जिसमें 11 लोगों को मृत्यु दंड और 20 को उम्रक़ैद दी गयी । लोगों को सबूतों के अभाव में बरी कर दिया गया । बचाव पक्ष इन सज़ाओं के ख़िलाफ़ सुप्रीम कोर्ट में अपील करेगा । अपेक्षा है सुप्रीम कोर्ट का फ़ैसला न्यायपरक होगा और विश्वास है फ़ैसले पश्चात सभी सामान्य रहेंगे । कोई भी राजनैतिक, साम्प्रदायिक, सामाजिक वितंडा फिर सिर नहीं उठाएगा । न्यायिक प्रक्रिया भी तेज गति से हो, फ़ैसला लटकाये न रहें । जो अपराधी हैं, उन्हें और दंगाइयों को सख़्त सज़ा मिले जिससे आम नागरिक को न्याय पर विश्वास उत्पन्न हो ।

उल्लेखनीय है 27 फ़रवरी 2002 को अयोध्या से साबरमती एक्सप्रेस में 59 कारसेवकों की हत्या ज्वलनशील पदार्थों से हो गयी थी इसके बाद साम्प्रदायिक दंगों में 1200 लोगों की जानें गयीं । हज़ारों घायल, घर से बेघर हो गये । एक गोधरा कांड के लिए दो जांच आयोग बनें । एक आयोग जांच के लिए गुजरात सरकार ने पूर्व न्यायाधीश जस्टिस के०जी० शाह के नेतृत्व में जांच समिति बनीं जिसके अध्यक्ष जी०टी० नानावती बनें । दूसरी जांच समिति ढ़ाई साल बाद रेलवे ने यू०सी० बनर्जी की अध्यक्षता में बनायी फ़ैसले का सफ़रनामा 22-05-2002 से चलकर 1-3-2011 तक चला और भी न जाने कितने वर्ष लगेंगे ।

इस फ़ैसले की ख़ूबियां देखें, दोनों जांच आयोगों की रिपोर्ट भी अलग-अलग राय रखती हैं । नानावती आयोग जांच समिति इसे षड्यंत्र, साज़िश बताती है तो यू०एस० बनर्जी की जांच समिति मात्र दुर्घटना । दोनों ही समितियां एक ही केस में एक ही काग़ज़ात-बयानों से अलग-अलग राय निकाल पायी और अदालत अलग ही राय रखती हैं । केन्द्रीय पोटा रिव्यू समिति भी इसे मात्र दुर्घटना मानी थी लेकिन फिर भी षड्यंत्रकारियों पर राज्य सरकार ने आतंकवादी निरोधक क़ानून के तहत पोटा लगाकर गिरफ़्तार किया बाद में हट गया वह अलग बात है ।

यहां प्रश्न यह है कि विशेष अदालत ने किसकी रिपोर्ट पर फ़ैसला दिया जबकि दोनों ही जांच आयोगों की राय भिन्न-भिन्न थीं । मान लें कि यह षड्यंत्र ही था तो जी०आर०पी० के जवान कहां थे ? चलती ट्रेन को रोक कर क्यों आग लगायी गयी, इसकी जांच जोनी चाहिए । अगर दुर्घटना थी तो इसकी भी जांच होनी चाहिए कि दुर्घटना किन कारणों से हुई ।

आशा की जानी चाहिए कि फ़ैसला हो, इसे भ्रष्टाचार की बीमारी न लगे । निरपराधियों को सज़ा न मिले और अपराधी सज़ा से बच न जाएं । वैसे भी बाबरी मस्जिद विध्वंस, मुंबई बम कांड, गोधरा और गुजरात दंगों में फ़ैसले आज तक निष्पक्ष नहीं हुए ।

शशिप्रभा शर्मा
हापुड़, ग़ाज़ियाबाद

एहतिशाम ख़ान मोबाइल : 09425842976

पब्लिक ट्रैवेल्स

सिवनी से मंडला	प्रात: 7:20
सिवनी से छिंदवाड़ा	प्रात: 7:55
छिंदवाड़ा से बालाघाट	प्रात:10:30
मंडला से सिवनी	दिन 12:50
बालाघाट से सिवनी	सायं 6:00
सिवनी से नैनपुर	सायं 5:40
नैनपुर से सिवनी	दिन 12:20

प्रतिदिन

नोट : शादी व पार्टियों के लिए 33, 40 एवं 50 सीटर बस उपलब्ध है संपर्क करें-

एहतिशाम ख़ान, बस स्टैंड, सिवनी (मध्य प्रदेश)

हज़रत सुहैला बिन्त मसऊद (रज़ि॰)

❖ तालिब हाशमी

हज़रत सुहैला बिन्ते मसऊद (रज़ि॰) जलीलुल क़द्र सहाबी हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि॰) की पत्नी थीं। उनका संबंध क़बीला ज़फ़र से था। उनके पहले पति उहुद की लड़ाई से पहले इन्तिक़ाल कर गये थे। हज़रत जाबिर (रज़ि॰) के पिता हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र का जब इन्तिक़ाल हुआ तो हज़रत जाबिर के साथ उनकी 6 छोटी बहनें थीं। उनकी देख-रेख और पालन-पोषण के लिए हज़रत जाबिर ने सुहैला बिन्ते मसऊद से निकाह कर लिया। अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को जब मालूम हुआ तो आप (सल्ल॰) ने जाबिर (रज़ि॰) से फ़रमाया–"जाबिर तुम ने एक बेवा से निकाह किया है अगर किसी कुंआरी से करते तो वे तुम से चुहल करतीं और तुम उनसे चुहल करते।" उन्होंने कहा कि या अल्लाह के रसूल बहनें कमसिन थीं, इसलिए होशियार औरत की ज़रूरत थी, जो उनकी देखभाल और तर्बियत कर सके। हज़रत जाबिर (रज़ि॰) की मां का पहले ही इन्तिक़ाल हो चुका था। अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा "तुमने ठीक किया।"

हज़रत सुहैला (रज़ि॰) को अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से बेपनाह अक़ीदत और मुहब्बत थी। हज़रत जाबिर जब कभी अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की दावत करते तो वे बड़े शौक़ से खाना तैयार करतीं। निकाह के कुछ समय बाद हज़रत जाबिर (रज़ि॰) ने अपने पिता का क़र्ज़ अदा करने की ख़ुशी में नबी (सल्ल॰) की दावत की। आप (सल्ल॰) हज़रत जाबिर (रज़ि॰) के घर गये तो आपको गोश्त, छुहारा और पानी पेश किया गया। आपने फ़रमाया शायद तुमको मालूम है कि मैं गोश्त चाव से खाता हूं। खाने के बाद जब नबी (सल्ल॰) चलने लगे तो हज़रत सुहैला ने अन्दर से आवाज़ दी या अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) मुझ पर और मेरे पति पर दुरूद पढ़ दीजिए। आप (सल्ल॰) ने बिना झिझक दुरूद पढ़ लिया।

ग़ुज़्वा-ए-ख़ंदक़ में एक दिन हज़रत जाबिर (रज़ि॰) ने देखा कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को तीन दिनों से कुछ भी खाने को नहीं मिला है और आपके पेट पर पत्थर बंधा हुआ है। हज़रत जाबिर (रज़ि॰) तड़प उठे और उसी समय पर जाकर सुहैला (रज़ि॰) से कहा कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) भूखे हैं, कुछ हो तो पकाओ। थोड़ा-सा जौ घर में मौजूद था उन्होंने तुरंत उसे पीस कर गुंथा। हज़रत जाबिर (रज़ि॰) ने बकरी का एक बच्चा ज़बह किया और उसका गोश्त बनाकर पकने को चूल्हे पर रख दिया। फिर वे नबी (सल्ल॰) को बुलाने चले गये। हज़रत सुहैला ने उनसे कहा खाना दो या तीन लोगों के ही लायक़ है, इसलिए नबी (सल्ल॰) के साथ ज़्यादा लोगों को न लाना, ऐसा न हो कि हमें शर्मिन्दगी उठानी पड़े।

हज़रत जाबिर ने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की ख़िदमत में हाज़िर होकर चुपके से कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) हमने आपके लिए खाने का इन्तिज़ाम किया है, आप थोड़े आदमियों के साथ चलिए। आप (सल्ल॰) ने दावत क़ुबूल की और साथ ही आम घोषणा कर दी कि जाबिर ने सभी ख़ंदक़ वालों की दावत की है।

हज़रत जाबिर (रज़ि॰) बहुत परेशान हुए लेकिन नबी (सल्ल॰) के अदब से चुप रहे। अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उनसे कहा कि चूल्हे से देग़ची न उतारना और जब तक मैं न आ जाऊं रोटियां न पकाना। फिर आप (सल्ल॰) सभी ख़ंदक़ वालों के साथ हज़रत जाबिर के घर गये और खाने में बरकत की दुआ की। इसका असर यह हुंआ कि नबी (सल्ल॰) के साथ सभी सहाबियों ने पेट भर कर खाना खाया, मगर वह फिर भी बचा रहा। फिर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने सुहैला (रज़ि॰) से कहा–ये तुम खाओ और लोगों के घर भेजो क्योंकि लोग भूखे हैं।

मुसनद अहमद में है कि हज़रत जाबिर (रज़ि॰) ने एक बार अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की ख़िदमत में उम्दा क़िस्म के छुहारे पेश किये, जिनकी गुठली नहीं थी। नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया–मैं समझा था गोश्त है। हज़रत जाबिर ने घर जाकर अपनी पत्नी से बताया। उन्होंने तुरंत बकरी ज़ब्ह करके गोश्त पकाया और नबी (सल्ल॰) की ख़िदमत में पेश किया। हज़रत सुहैला (रज़ि॰) की ज़िन्दगी के बारे में इससे ज़्यादा हालात किसी किताब में नहीं मिलते।

AL-HERA LIBRARY

(Run and Managed by **Sabiha Welfare Trust,** Registration No. 5418/4603)
Near Road No. 10, Main Road, Jawahar Nagar, P.O. Azadnagar,
Mango, Jamshedpur-832110, Jharkhand (INDIA)
E-mail : al_hera_library@sify.com, Mob. : 09334634662, 09204000609

APPEAL

An academic library named **"AL-HERA LIBRARY"** was established in 2004 to uplift the education standard in the downtrodden people of the society. Now it is running under **"SABIHA WELFARE TRUST" Regn. no. 5418/4603, PAN No. AAITS2377J.** This is the only academic library in approx. 8 lakhs populated area, it works progressively and achieving its goal day by day. It was started with 75 books only & after 6 consecutive years it reaches 4656 books. But still it requires your support to fulfill the student's requirements. Apart from that library also works for carrier counseling, AIDS awareness, blood donation, quiz contest etc.

The president of the library received **CMD** (chairman and managing director) award 2006 in the category of **"CORPORATE RESPONSIBILITY"** from Cummins in India held at Pune. Visit **(orkut.com>search>type al hera library).**

Here is the kind request to all of you that please bring your hand forward for this noble cause to serve the students for their glorious future and make our country developed and strong through education.

You are requested to send your donations to :
A/C name : SABIHA WELFARE TRUST
Bank name : STATE BANK OF INDIA
Branch : Bistupur, Jamshedpur, Jharkhand
A/C no. : 30573132872

May Allah give you returns, Inshallah, Ameen

PRESIDENT
MD. SHAHNAWAZ QUAMAR

इस्लाम का अध्ययन क्यों करें?

● संपादन प्रभाग

इस्लाम हमारी या किसी की भी निजी सम्पत्ति नहीं है । यह सम्पूर्ण मानवजाति की संयुक्त निधि है । यह मानवजाति के कल्याण के लिए, हमारे बनाने वाले मालिक तथा पालनहार के बताए हुए वे नियम हैं, जिन्हें अपनाकर इन्सान लोक और परलोक दोनों जगह सफलता एवं मुक्ति प्राप्त कर सकता है । इसलिए इन्हें अपनाने और स्वीकार करने में हमारी अपनी भलाई है ।

हम देखते हैं कि ये सूर्य, चन्द्रमा और सितारे, ये आग, पानी और हवा, ये फल-फूल और वनस्पतियां, ये लोहा, तांबा, सोना आदि और इस धरती और आकाश की एक-एक चीज़ एक अटल और बेलोच क़ानून में जकड़ी हुई है, जिसके ख़िलाफ़ वह बाल बराबर भी हिल नहीं सकती । संसार की सारी चीज़ें कुछ निश्चित उसूलों और नियमों की पाबन्द हैं, जिनके अनुसार काम करके ही सभी व्यक्ति, समाज और समुदाय उनसे बराबर सेवा का काम ले सकते हैं । वैज्ञानिक और दूसरे सभी कलाकार इन नियमों तथा क़ानूनों को बनाते या पैदा नहीं करते, बल्कि अवलोकनों और तजुर्बों के द्वारा केवल मालूम करते हैं कि अमुक विषय में प्राकृतिक क़ानून यह और यह है। चूंकि हर चीज़ से संबंधित इन क़ानूनों को स्रष्टा ने उसकी प्रकृति में इस प्रकार रख दिया है कि वे किसी अवस्था में भी उससे अलग नहीं हो सकते । इस कारण इनको प्राकृतिक क़ानून के नाम से पुकारा जाता है ।

फिर इस बात से भी इन्कार नहीं किया ज़ा सकता कि इन सब क़ानूनों और नियमों के निर्धारण और क्रम-निर्माण या आपसी संबंध में किसी साधारण व्यक्ति को तो क्या सम्पूर्ण मानवजाति को भी अपनी सम्पूर्ण सामग्री सहित कोई दख़ल नहीं और ये सम्पूर्ण प्राकृतिक नियम सब पर समान रूप से लागू और अटल हैं ।

आप यह भी देखते हैं कि इस संसार में इन नियमों के उल्लंघन और उनके तोड़ने ही का दूसरा नाम बिगाड़ है। जीवन के किसी भी हिस्से में प्राकृतिक नियमों को छोड़कर देखिए, वहीं ख़राबी तथा बिगाड़ की कोई-न-कोई शक्ल सामने आ जाएगी। संसार की प्रत्येक वस्तु का विकास इसी बात पर निर्भर करता है कि उन प्राकृतिक नियमों की अधिक-से-अधिक पाबन्दी की जाए, जो उसके लिए उसके रचयिता की ओर से निश्चित कर दिये गये हैं ।

भाइयो ! जिस प्रकार ईश्वर ने अपनी सृष्टि और उसकी एक-एक वस्तु के लिए अटल प्राकृतिक नियम बना दिये हैं, ठीक उसी प्रकार इन्सान के नैतिक और सामाजिक जीवन के लिए भी ईश्वर के निर्धारित अटल और निश्चित नियम मौजूद हैं, जिनकी ठीक-ठीक पैरवी करने से ही मानवजाति को इस संसार में पूर्ण शान्ति और सुकून का जीवन और मरने के बाद मुक्ति तथा सुखी जीवन प्राप्त हो सकता है । मगर इस संसार में प्रकृति और मानवता के लिए ईश्वर के निर्धारित किये हुए प्राकृतिक क़ानूनों में अन्तर यह है कि प्राकृतिक और नैसर्गिक सीमा में उन नियमों को ईश्वर ने अपनी प्रलयंकर शक्ति से बलपूर्वक लागू कर दिया है और मानवता (चरित्र-आचरण, अर्थ और राजनीति आदि) के दायरे में उनको बलपूर्वक लागू करने के बजाए मानवजाति की इच्छा पर छोड़ दिया है कि चाहे तो उन पर चले और न चाहे तो न चले। चूंकि इस सृष्टि की सम्पूर्ण प्राकृतिक व्यवस्था ईश्वर के प्राकृतिक नियमों के अधीन है, इसलिए इन नियमों को न मानने का परिणाम तो तुरन्त सामने आ जाता है, लेकिन नैतिक तथा सामाजिक जीवन से संबंधित ईश्वरीय नियम को न मानने का परिणाम तुरन्त सामने नहीं आता । नैतिक और सामूहिक जीवन से संबंधित ईश-नियमों की शिक्षा और उन्हें लोगों तक पहुंचाने के लिए ईश्वर ने अपनी असीम कृपा से काम लेते हुए, हर क़ौम में अपने संदेष्टा भेजे, जिन्होंने न केवल यह कि ईश्वर की सारी-की-सारी शिक्षाएं ठीक वैसी-की-वैसी बिना कम और ज़्यादा किये हुए अपनी-अपनी क़ौम तक पहुंचा दीं, बल्कि उनमें से एक-एक बात पर अमल करके भी दिखा दिया । ईश्वर के उन सभी दूतों ने अपने-अपने समय में हर जगह इन्सानों को ईश्वर के सिवा दूसरों की बन्दगी से निकाल कर एक ही सत्य-धर्म पर जमा किया और उन्हें बताया कि एक ईश्वर को छोड़कर जिन-जिन की भी तुम बन्दगी करते हो, वे सब तुम्हारी तरह उसके बन्दे हैं । कुछ बातों के सिवा उन सब ईश-दूतों की एक ही शिक्षा थी और वह यह कि यह चांद,

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)

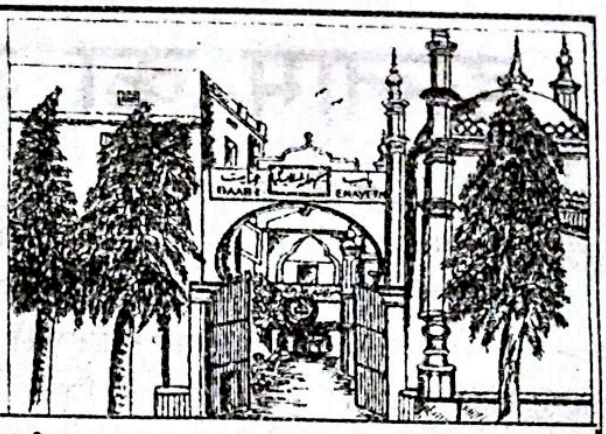

एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 93 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2010-2011 के सत्र के लिए 11वीं, 12वीं और बी०ए० में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 14 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 125 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें-उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● कुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

.....में अपनी रक़म भेज सकते हैं.....

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें-THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

.....चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता.....

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

BANK A/C NO. : 10581, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKIN GA/C NO.: 300402010010581

☎ 0631-2734428 ● Mobile : 9955655960

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

अध्यक्ष
डॉ० फ़रासत हुसैन

नाज़िम
डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

ये सितारे, ये ज़मीन और आसमान की सम्पूर्ण शक्तियां, एक ईश्वर की सृष्टि हैं । वही तुम्हारा और सबका पैदा करने वाला है, वही रोज़ी देने वाला है और वही मारने वाला और जिलाने वाला है । यह चोरी, यह लूटमार, यह शराबनोशी, ये जुआ, ये बदकारियां जो तुम करते हो सब पाप हैं, इन्हें छोड़ दो । सच बोलो, न्याय करो, न किसी की जान लो और न किसी का माल छीनो, जो कुछ लो न्याय के साथ लो, जो कुछ दो न्यायपूर्वक दो । तुम सब इन्सान हो, इन्सान-इन्सान सब बराबर हैं ।

महानता और सज्जनता इन्सान की नस्ल और वंश में नहीं है। रंग-रूप, माल और दौलत में नहीं है, बल्कि ईश-भक्ति, नेकी और पवित्रता में है । जो व्यक्ति ईश्वर से डरता है और नेक और पवित्र है, वही महापुरुष है और जो ऐसा नहीं, वह कुछ भी नहीं । मरने के बाद हम सबको अपने प्रभु के समक्ष उपस्थित होना है । उस वास्तविक न्यायाधीश के यहां न कोई सिफ़ारिश काम आएगी, न रिश्वत चलेगी और न किसी का वंश पूछा जाएगा । वहां केवल ईमान (आस्था) और भले कामों की पूछ होगी । जिसके पास यह सामान होगा, वह स्वर्ग में जाएगा और जिसके पास उनमें से कुछ न होगा, वह असफल नरक में डाला जाएगा ।

जब सभी इन्सान, गोरे हों या काले, गेहुंए रंग के हों या पीले और पूर्वी हों या पश्चिमी, सब एक ही जाति से संबंध रखते हैं, एक ही स्वभाव के मालिक हैं तो उनके लिए उनके पैदा करने वाले की ओर से देश, काल के कारण विभिन्न धर्म कैसे आ सकते थे। हज़रत आदम (अलैहि०) से लेकर हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तक तमाम सन्देष्टाओं का एक ही धर्म लेकर आना बुद्धि की मांग है और यही क़ुरआन से प्रमाणित है और ऐतिहासिक सत्य भी यही है । अतएव ईश्वर ने यह वास्तविकता हम इन्सानों पर स्पष्ट करने के लिए अपने अन्तिम संदेष्टा से पवित्र क़ुरआन में कहा कि तुम्हें कोई नया धर्म देकर नहीं भेजा गया है, बल्कि यह वही धर्म है जिसे पिछले सन्देष्टा लेकर आते रहे हैं ।

यह बात भी सर्वमान्य वास्तविकता है कि ईश्वरीय ग्रन्थों में से केवल पवित्र क़ुरआन और ईश्वर के सन्देष्टाओं में से केवल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ही एक ऐसी हस्ती हैं, जिनका चरित्र और मार्गदर्शन इस समय संसार में ज्यों का त्यों मौजूद है और किसी भी परिवर्तन से सुरक्षित है और इतिहास गवाह है कि जहां पिछले सन्देष्टाओं के आचरण और उनकी शिक्षाओं का इस समय ठीक-ठीक मौजूद होना तो दूर रहा, उनके दो-चार सौ वर्ष बाद भी उनके ठीक-ठीक दुनिया में मौजूद होने का प्रमाण नहीं मिलता । ऐसा किसी संयोग से नहीं हुआ, बल्कि इस पवित्र-ज्योति को सत्य के खोजियों के लिए क़ियामत (प्रलय) तक सुरक्षित रखने की ज़िम्मेदारी ईश्वर ने ख़ुद ले ली है, जैसा कि कहा, "इस ज़िक्र (पवित्र क़ुरआन) को हमने ही उतारा है और हम स्वयं उसके रक्षक हैं ।" (क़ुरआन, 15:9)

अत: सत्य प्रेमियों को चाहिए कि पवित्र क़ुरआन और मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं का अवश्य अध्ययन करें, ताकि सही रहनुमाई मिल सके । आप इस पवित्र क़ुरआन और अन्तिम सन्देष्टा मुहम्मद (सल्ल०) की पवित्र जीवनी के अध्ययन के बाद पाएंगे कि इनमें वे सारी शिक्षाएं मूलरूप से मौजूद हैं, जो विभिन्न समुदायों और विभिन्न देशों में समय-समय पर आरम्भ से ईश्वर की ओर से उतारी जाती



रही हैं । मुहम्मद (सल्ल०) से पूर्व आए हुए सम्पूर्ण पैग़म्बर (सन्देष्टा) ईश्वर के सच्चे और अतिप्रिय बन्दे थे । इसलिए मुसलमान होने के लिए ज़रूरी क़रार दिया गया है कि मुहम्मद (सल्ल०) के साथ-साथ उन सबको सच्चा स्वीकार किया जाए । उन पर ईमान लाया जाए । उनमें से किसी एक का भी इन्कार मनुष्य को सत्य धर्म (दीने-इस्लाम) से निकाल बाहर कर देता है। क़ुरआन में है–

"ऐ मुहम्मद ! कहो हम ईश्वर को मानते हैं और उस शिक्षा को मानते हैं जो हम पर उतारी गयी है । इसके साथ ही हम उन शिक्षाओं को भी मानते हैं, जो इबराहीम (अलैहि०), इस्माईल (अलैहि०), इसहाक़ (अलैहि०), याक़ूब (अलैहि०) और उनकी सन्तान पर उतारी गयी थीं और उन हिदायतों पर भी ईमान रखते हैं, जो मूसा (अलैहि०), ईसा (अलैहि०) और दूसरे पैग़म्बरों को उनके पालनहार की ओर से दी गयीं। हम उनके बीच अन्तर नहीं करते और हम अल्लाह के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं ।"

अत: हम लोग जो पवित्र क़ुरआन और मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं को एकमात्र मार्गदर्शन के स्रोत के रूप में पेश करते हैं तो इसका कारण यह बिल्कुल नहीं है कि हम ईश्वर की ओर से भेजे जाने वाले पहले सन्देष्टाओं के विपरीत किसी पक्षपात या हठ में पड़े हुए हैं । ऐसी किसी बात का थोड़ा-सा हो जाना भी स्वयं इस्लामी दृष्टि से 'कुफ़्र' (अधर्म) में पड़ जाना है । हम यह बात इसलिए कहते हैं कि उपर्युक्त मार्गदर्शन के स्रोत के अलावा किसी सन्देष्टा और दूत की शिक्षा अपने मूल रूप में, बिना किसी मिलावट के कहीं मौजूद नहीं है । ईश्वरीय धर्म और उसकी दी हुई जीवन-व्यवस्था को मालूम करने का अब एक ही संभव उपाय है और वह यह कि पवित्र क़ुरआन और मुहम्मद (सल्ल०) की शिक्षाओं की ओर लौटा जाए ।

भाइयो ! आप 'सत्य-धर्म' (इस्लाम) और उसके लाने वाले के जीवन-चरित्र से परिचित होने का कष्ट तो करें । किसी बात या दृष्टिकोण को स्वीकार या अस्वीकार करने का प्रश्न तो बाद में पैदा होता है । लेकिन इस नीति को आप कैसे सही कह सकते हैं कि आदमी दूसरे से ज़िद के कारण अपने परलोक को ख़तरे में डाल दे और किसी भलाई को केवल इसलिए जानने की भी कोशिश न करे कि वह दूसरा व्यक्ति भी (जिससे उसे किसी बात पर नफ़रत हो गयी है) उसे अपनाए हुए है ?

इस्लाम किसी की पैतृक सम्पत्ति नहीं, यह तो उसी का है जो इस पर चले । चाहे वह किसी देश का हो । चाहे उसका कोई भी देश, समुदाय, रंग या परिवार एवं वंश हो । इतिहास गवाह है कि मानव-सफलता की इस सम्पूर्ण व्यवस्था पर व्यवहारत: स्थापित होने वाली जीवन-व्यवस्था शान्ति और सुरक्षा तथा न्याय और इन्साफ़ में बस आप ही अपनी मिसाल थी । क्या अजब है कि ईश्वर का झंडा फिर से उच्च करने का काम अब इसी देश के बसने वालों से लिया जाए और सम्पूर्ण मानवता, जो इस समय मानव रूपी दरिन्दों के हाथों मौत के घाट उतर रही है, उस तक अब इन्हीं के हाथों यह अमृत जल पहुंचाया जाना निर्धारित हो चुका हो ।

मुसलमानों को भी चाहिए कि वे अपने कर्तव्यों को समझकर और ईश्वरीय शिक्षाओं पर सीधी तरह चलकर उसकी तरफ़ संसार का पथ-प्रदर्शन करें और सन्देष्टाओं के सही वारिस बनकर अपने सुपुर्द ईश-विधान को अमली जामा पहनाने के लिए तैयार हो जाएं और अपने कर्म और चरित्र से इस्लाम के लिए बदनामी का कारण न बनें कि दुनिया उनके चरित्र एवं व्यवहार को इस्लामी चरित्र और इस्लामी व्यवहार समझकर इस्लाम से बदगुमान और दूर हो। कहीं ऐसा न हो कि ईश-धर्म की इस ग़लत नुमाइन्दगी पर वे ईश-प्रकोप में घिर जाएं ।

शादी के रिश्ते

सिर्फ़ इस्लामी बुनियाद पर

(मुफ़्त)

पता S.M.S. करें

BIO-DATA

भेज दिया जाएगा

मोबाइल : 09936570147

मूर्तिपूजा : सर्वथा अवैदिक और त्याज्य

■ कामता प्रसाद मिश्र

[2553/3, निरालानगर (शिवपुरी), सुल्तानपुर, उ०प्र०]

महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रणीत अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के मूर्ति पूजा विरोध संबंधी कुछ अंशों को मूल रूप से उद्धृत करना आवश्यक प्रतीत होता है जिसमें आर्य समाज के मूर्तिपूजा विरोध की सार्थकता सिद्ध है–

1. "यह मूर्ति पूजा केवल पाखंड मत है इसे जैनियों ने चलायी है ।"

2. "जब परमेश्वर निराकार सर्वव्यापक है तब उसकी मूर्ति ही नहीं बन सकती और जो मूर्ति के दर्शन मात्र से परमेश्वर का स्मरण होवे तो परमेश्वर के बनाए पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति आदि अनेक पदार्थ जिनमें ईश्वर ने अद्भुत रचना की है...उनको देखकर परमेश्वर का स्मरण नहीं हो सकता ।"

3. जब परमात्मा को व्यापक मानते हो तो वाटिका से पुष्प पत्र तोड़कर क्यों चढ़ाते हो ? चन्दन घिसकर क्यों लगाते ? धूप को जला के क्यों देते ? घंटा घरियाल झांझ मजीरा पखावज को लकड़ी से कूटना पीटना क्यों करते हो, तुम्हारे हाथों में है, क्यों जोड़ते ? सिर में है, सिर क्यों नवाते ? अन्न जलादि में है क्यों नैवेद्य धरते ? जल में है स्नान क्यों कराते ? क्योंकि उन सब पदार्थों में परमात्मा व्यापक है ।"

4. "वेदों में पाषाणादि मूर्तिपूजा और परमेश्वर के आवाहन विसर्जन करने का एक अक्षर भी नहीं है ।"

5. "आवाहन, प्राण प्रतिष्ठादि, पाषाणादि मूर्ति विषयक वेदों में एक मंत्र भी नहीं है...पाषाण की मूर्ति बना मंदिरों में स्थापन कर चंदन अक्षतादि से पूजें ऐसा लेशमात्र भी नहीं ।"

6. जब वेदों से निषि मूर्ति पूजादि कर्मों को तुम करते हो तो पापी क्यों नहीं ?

7. "मनुष्यों का ज्ञान जड़ की पूजा से नहीं बढ़ सकता किन्तु जो कुछ ज्ञान है वह भी नष्ट हो जाता है ।"

8. 'मूर्तिपूजा सीढ़ी नहीं किन्तु एक बड़ी खायीं है, जिसमें गिरकर चकनाचूर हो जाता है, पुनः उस खाई से निकल नहीं सकता किन्तु उसी में मर जाता है ।"

9. "किन्तु मूर्तिपूजा करते-करते ज्ञानी तो कोई न हुआ प्रत्युत सब मूर्तिपूजक अज्ञानी रहकर मनुष्य जन्म खोके बहुत से मर गये और जो अब हैं वा होंगे वे भी...नष्ट हो जाएंगे ।"

10. "मूर्ति पूजा करना अधर्म है ।"

11. "पाषाणादि पूजा तो सर्वथा छोड़ने और मातादि मूर्तिमानों की सेवा ही में कल्याण है ।"

12. "मूर्ति के जड़त्व धर्म आत्मा में आने से विचार शक्ति घट जाती है ।

(सत्यार्थ प्रकाश, एकादशसमुल्लास)

महर्षि लिखित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा वेद विरुद्ध मतखंडन ग्रंथों में मूर्तिपूजा निषेध संबंध अनेक प्रमाण एवं तर्क सम्मत तथ्यों को पढ़कर आदरणीय तिवारी जी को शंका निवारण में अवश्य बल मिलेगा । आर्य विद्वान पं० लेखराम, स्वामी दर्शनानंद सरस्वती आदि की पुस्तकों में मूर्तिपूजा विरोध का ज्ञान भंडार भरा पड़ा है । मूर्तिपूजा को आर्य विद्वान पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय तथा पं० रामचन्द्र देहलवी आदि ने निरर्थक सिद्ध कर दिया है ।

वेद और मूर्तिपूजा

मूर्तिपूजा अवैदिक, अनाचरणीय तथा निंदनीय व अधार्मिक है । मूर्तिपूजा को वेद ने पूर्ण निषेध कर त्याज्य बतलाया है । कुछ वेद मंत्र प्रस्तु हैं–

1. न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः।

(यजु० अ० 32 मं० 03)

भाषार्थ : पूर्ण जो किसी प्रकार से कम नहीं, जो जन्म नहीं लेता, और निराकार जिसकी किसी प्रकार की मूर्ति नहीं इत्यादि लक्षण युक्त जो परमेश्वर है जिसकी आज्ञा का ठीक-ठीक पालन और उत्तम कीर्तियों के हेतु जो सत्य भाषणादि कर्म हैं उनका करना ही जिसका नाम स्मरण कहाता है । महर्षि दयानंद सरस्वती जी कहते हैं–"कदाचित कोई शंका करे कि शरीरधारी की उपासना करने में क्या दोष है ? तो यह बात समझना चाहिए कि जो प्रथम जन्म ले के



"पहुंचा दो मेरी ओर से चाहे एक ही आयत क्यों न हो"

–हज़रत मुहम्मद सल्ल॰

आइए लोगों तक कुरआन पहुंचाएं !
आइए ! अपने फ़र्ज़ मंसबी को अदा करें !!
आइये ! अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की अज़ीम सुन्नत को अदा करें !!!

कुरआन और हदीस से यह बात साबित है कि अब क़ियामत तक कोई नबी या रसूल आने वाला नहीं है । क़ियामत तक आने वाले इन्सानों के लिए अल्लाह तआला मुकम्मल हिदायतनामा "कुरआन मजीद" के तौर पर दे चुका है । अब इस हिदायतनामा यानी कुरआन मजीद को पूरी इन्सानियत तक पहुंचाने की ज़िम्मेदारी मुस्लिम उम्मत की है । क्या हम इस ज़िम्मेदारी को अदा कर रहे हैं ? यदि नहीं तो तुरंत इसकी चिंता करें, इससे पहले कि अल्लाह हम से हिसाब ले।

अत: प्रत्येक मुसलमान यह प्रोग्राम बनाए कि

- वह अपने ग़ैर-मुस्लिम दोस्त या पड़ोसी या जिन ग़ैर-मुस्लिमों से ताल्लुक़ात हों, उन्हें अपने घर आमंत्रित करे और कुरआन मजीद का अज़ीम तोहफ़ा पेश करे ।
- यदि उन्हें घर नहीं बुला सकते हों तो उनके पास जाए और उनकी सेवा में कुरआन मजीद का तोहफ़ा पेश करे ।

SALAAM Centre

Head Office: # 65/1, 1st Main Road, S.R.K. Garden, JAYANAGAR EAST, Bangalore - 41
Branch: G.C., RICH HOMES, RICHMOND ROAD, Bangalore - 25, Cell: 99451 88488, 99451 77477
Email: salaamcentrebangalore@gmail.com www.salaamcentre.org

शरीर धारण करेगा और फिर वह वृद्ध होकर मर जाएगा तब किसकी पूजा करोगे । इस प्रकार मूर्ति पूजा का निषेध वेद से सिद्ध हो गया ।''

(ऋ॰ भा॰भू॰ ग्रंथ प्रमाण्याप्रामाण्य विषय)

2. स पर्य्यगाच्छु क्रम क़ायम ब्रणमस्नाविर छं सुद्धम पाप विद्धम ।

कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भू ।

(यजु॰ अ॰ 40 म॰ 8)

भाषार्थ : जो परमेश्वर (कवि) सबका जानने वाला (मनीषी) सबके मन का साक्षी (परिभू) सबके ऊपर विराजमान और (स्वयंभू) अनादि है, जो अपनी अनादि स्वरूप प्रजा को अंतर्यामी रूप से और वेद के द्वारा सब व्यवहारों का उपदेश किया करता है (सपर्य्यगात्) सो सब में व्यापक (शुक्रम) अत्यंत पराक्रम वाला (अकायं) सब प्रकार के शरीर से रहित (अव्रण) और सब रोगों से रहित (अस्नाविर) नाड़ी आदि के बंधन से पृथक (शुद्धं) सब दोषों से अलग और (अपायविद्धं) सब पापों से न्यारा, इत्यादि लक्षण युक्त परमात्मा है वही सबकी उपासना के योग्य है । ऐसा ही सब को मानना चाहिए । महर्षि कहते हैं–''इस मंत्र में भी शरीर धारण करके जन्म मरण होना इत्यादि बातों का निषेध परमेश्वर विषय में पाया ही गया इससे इसकी पत्थर आदि की मूर्ति बना पूजना किसी प्रमाण या युक्ति से सिद्ध नहीं हो सकता ।'' (ऋ॰ भा॰ भू॰ ग्रंथप्रमाण)

3. अंधन्तमः प्रविशन्ति ये प्रसंभूति मुपासते ।

(यंजु॰ 40/मं॰ 9.)

भाषार्थ : जो असंभूति अर्थात अनुत्पन्न अनादि प्रकृति कारण की ब्रह्म के स्थान में उपासना करते हैं वे अंधकार अर्थात अज्ञान और दुखसागर में डूबते हैं और संभूति जो कारण से उत्पन्न हुए कार्य रूप पृथ्वी आदि भूत पाषाण और वृक्षादि अवयव और मनुष्यादि के शरीर की उपासना ब्रह्म के स्थान में करते हैं वे उस अंधकार से भी अधिक अंधकार अर्थात महामूर्ख चिरकाल घोर दुख रूप नरक में गिरके महा क्लेश भोगते हैं । (सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास)

उपर्युक्त वेद मंत्रों द्वारा महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने मूर्ति पूजा को अवैदिक, अवैज्ञानिक, अनैतिक, अनाचरणीय, अस्वाभाविक, निंदनीय, अधार्मिक तथा असामाजिक और त्याज्य सिद्ध कर दिया है । इसी प्रकार उपनिषदों में भी ईश्वर को निराकार निरवयव तथा अकायम् कहकर मूर्तिपूजा निषेध कर दिया है ।

उपनिषदों में मूर्तिपूजा निषेध :

पच्चक्षुषा न पश्यति येन चक्षूति पश्यन्ति ।
तदैव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं पदिदमुपासते ।।

(केन॰ 1/6)

भावार्थ : जो आंख से नहीं देखा जाता अपितु जिससे आंख देती है तू उसी को ब्रह्म जान और उसी की उपासना कर और जो उससे भिन्न सूर्य, विद्युत और अग्नि आदि जड़ पदार्थ हैं उनकी उपासना मत कर । (सत्यार्थ प्रकाश)

इसी प्रकार षट्दर्शनों में भी मूर्ति पूजा का निषेध किया है कुछ सूत्र प्रस्तुत :

न प्रतीके न हिस :

(वेदांत 04/01/04

शरीरादिव्यति रिक्तः पुमान। सांख्या 01/40

उक्त सूत्रों में भी मूर्ति पूजा का पूर्ण निषेध किया गया है ।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी के सत्यार्थ प्रकाश,

Jamaat-e-Islami Social Service Society (Regd), Gaya

The Society is in service in the field of education, health and Islamic understanding for the last 34 years. Our resources are limited, our task is tremendous. We seek your co-operation in the following activities:-

1. **IQRA PUBLIC SCHOOL :** Besides 800 paying students, about 150 poor or orphan girls & boys are provided free education upto Matriculation with Islamic Carriculam.
2. **MILLAT HOSPITAL :** Every year about 15000 poor & needy patients are provided with free medical treatment & medicine besides other services.
3. **INTEREST-FREE SOCIETY :** Provides short-term loan without interest to needy people.
4. **ISLAMIC INFORMATION CENTRE :** Established at Bodh-Gaya, where lakhs of foreigners visit every year during Nov - March. The Centre provides reading materials on Islam, distributes Islamic literature and invites interested visitors for discussion besides inter-faith dialogue on regular basis.

Kindly send your cheque/draft in favour of the society

(Q. Hoda) Chairman — *(Prof. M. B. Zaman)* Secretary

JISSS, Millat Campus, Leitch Road, Gaya-823001

ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका आदि ग्रंथों तथा वेद के प्रमाणों के आधार पर मूर्ति पूजा अवैदिक तथा अवैज्ञानिक सिद्ध हो जाती है ।

मूर्तिपूजा से हानियां

मूर्तिपूजा से समाज को महान हानि हुई है किन्तु अज्ञानता, अंधविश्वास, पाखंड, आडम्बर ठगी तथा स्वार्थी तत्वों के कारण समाज से यह धोखाधड़ी की उपासना की भ्रामात्मक रीति पूर्ण रूपेण समाप्त नहीं हो सकी । मूर्तिपूजा से हानियां निम्नांकित है :

1. मंदिरों में सोना, हीरे आदि क़ीमती धातुओं के चढ़ावे से धन एकत्रित हुआ । इस अपार धन संपत्ति के लोभ के कारण विदेशी आक्रांता भारत पर आक्रमण करते रहे । परिणामस्वरूप भारत परतंत्रता की शृंखला में जकड़ उठा ।

2. मूर्तिपूजा का सबसे बड़ा अभिशाप घूसख़ोरी है जो मूर्तिपूजा के चढ़ावे का दूसरा रूप है । मूर्तिपूजा के कारण ही घूसख़ोरी का जन्म हुआ ।

3. मूर्तिपूजा के कारण ही व्यक्ति जगह-जगह घूमकर समय नष्ट करता है उसके साथ धन भी नष्ट होता है । अनेक लोगों की बहू, बेटियों का अपहरण हो जाता है तो कुछ की इज़्ज़त लुट जाती है ।

4. मूर्तिपूजा के कारण ही देवदास तथा देवदासियों की प्रथा चली और व्यभिचार बढ़ा ।

5. पुजारियों को मुफ़्त व्यर्थ में धन मिलता है जिससे उनमें आलस्य, प्रमाद, अकर्मण्यता तथा परजीवी बनने की भावना उत्पन्न होती है ।

6. मूर्तियों को नैवेद्य चढ़ाया जाता है उसके नालियों में जाकर सड़ने-गलने से दुर्गंध होता है तथा प्रदूषण फैलता है और अनेक रोगों का जन्म होता है ।

7. मूर्तियों के चोरी हो जाने से पुजारी रोता और शोक मनाता है तथा दुख भोगता है ।

मूर्तिपूजा ईश्वरोपासना के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा है ऋषि दयानंद जी ने मूर्ति पूजा को पाप माना है क्योंकि यह वेद विरुद्ध कर्म है । जिससे श्री तिवारी जी परिचित है ।

आर्य-विद्वान लेखक दत्तात्रेय तिवारी जी कहते हैं : "राजधानी दिल्ली में दो अरब रुपये से निर्मित अक्षरधाम मंदिर इसका सही उत्तर है ?" मान्यवर तिवारी जी-आज के मठ, मंदिर, गुरुद्वारा तथा गिरजा घर, भ्रष्टाचार, दुराचार, अनाचार, ठगी, अंधविश्वास, पाखंड, अनैतिकता तथा आतंकवाद के अड्डे बन चुके हैं । वहां से असामाजिक तत्वों का जन्म हो रहा है जिससे देश तथा समाज को भारी क्षति तथा जन हानि उठानी पड़ रही है । उसी कड़ी में एक अड्डा और तैयार हो गया है जिसे भौतिकवाद, पूंजीवाद तथा धनाभिमान का भाव प्रदर्शन समझना चाहिए तथा समाज के लिए एक और अभिशाप । (सा॰ : 'वैदिक सार्वदेशिक')

HINDUSTAN TRAVELS

Prop.
ABDUL RASHID
Mob : 9425254335



Ambikapur to Bilaspur 4:30 (Morning)
Vishrampur to Bilaspur 4:25 (Morning)
Raipur to Ambikapur 9:20 (Night)

Address : Imlipara, Ambikapur, Surguja-497001 (C.G.)

इस्लाम में न्याय और उदारता

■ मुस्तफ़ा हसनी अस्सबाई

जब सुल्तान मुहम्मद द्वितीय ने कुस्तुनतुनिया पर विजय प्राप्त कर ली तो वह वहां सोफ़िया के गिरजे में दाख़िल हुआ, जहां बहुत-से पादियों और बहुत से ईसाइयों ने पनाह ली थी । सुल्तान ने उनसे पूरे आदर-सत्कार के साथ भेंट की और उनको विश्वास दिलाया कि उनको किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचाई जाएगी तथा वे सब निश्चिंत होकर अपने-अपने काम-धंधों में लग जाएं और अपने घरों को लौट जाएं । उसने उनकी जायज़ शिकायतें दूर करने और समस्याएं हल करने में भरपूर योगदान का भी विश्वास दिलाया । अत: उसने उनकी समस्याओं पर ध्यान दिया तथा उनको यह आश्वासन दिया कि वे अपने व्यक्तिगत क़ानूनों पर पूरी स्वतंत्रता से अमल कर सकते हैं । यही नहीं बल्कि उसने उनको यह स्वतंत्रता भी दी कि वे जिसको चाहें अपना मुख्य धर्म गुरु (पीटर ऑफ़ यार्क) चुन लें । अत: उन्होंने जिना डेविस को पीटर ऑफ़ यार्क चुना, तो सुल्तान ने इस अवसर पर वैसे ही सरकारी स्तर पर जश्न मनाया जैसा कि रोमन राज्य में होता था । उसने नवनिर्वाचित नेता को विश्वास दिलाया कि उसको वे सभी सुविधाएं व सम्मान प्राप्त होंगे, जो रोमन राज्य में पीटर ऑफ़ यार्क को प्राप्त थे । सुल्तान ने उसे एक शानदार घोड़ा उपहार में दिया तथा अपने अंगरक्षकों के विशेष दस्ते में से एक अंग रक्षक भी पीटर की रक्षा के लिए नियुक्त किया तथा सरकार के बड़े-बड़े अधिकारी सुल्तान के आदेश पर पीटर को उस नवनिर्मित शानदार भवन तक छोड़ने गये, जिसे सुल्तान ने विशेष रूप से उसके लिए बनवाया था । सुल्तान ने यह घोषणा भी की कि आर्थोडोक्स पंथ के क़ानूनों को सरकारी मान्यता प्राप्त होगी तथा उन क़ानूनों का संरक्षक पीटर ऑफ़ यार्क होगा । युद्ध के दौरान उनका जितना सामान चर्चों आदि से मिला था, वह सारा सामान संबंधित संस्थाओं को वापस कर दिया गया ।

सुल्तान ने ईसाइयों के साथ विशाल हृदयता का यह व्यवहार उस स्थिति में किया, जबकि नगर पर विजय प्राप्ति के समय ईसाइयों से उसका कोई ऐसा समझौता नहीं हुआ था, जिसकी पाबन्दी उसके लिए ज़रूरी होती । उसने दयाशीलता का जो व्यवहार किया वह उसकी विशाल हृदयता तथा दयालुता के कारण था । उसके इस व्यवहार का फल यह हुआ कि ईसाई यह प्रतीत करने लगे कि वे रोमन साम्राज्य के मुक़ाबले इस नयी इस्लामी हुकूमत में ज़्यादा सुरक्षित, सम्मानपूर्ण तथ धार्मिक स्वतंत्रता के साथ जीवन व्यतीत कर रहे हैं ।

इसी प्रकार उस्मानी शासकों ने विजित क्षेत्रों व ईसाई नागरिकों के साथ सौहार्दपूर्ण व्यवहार जारी रखा । जिस समय तुर्की की उस्मानी ख़िलाफ़त के अंतर्गत ईसाइयों के साथ यह सौहार्दपूर्ण व्यवहार हो रहा था, ठीक उसी काल में यूरोप में धार्मिक पक्षपात पूरे उफ़ान पर था । पक्षपाती ईसाई शासक दूसरे ईसाई फ़िरक़ों का जीना हराम किये हुए थे तथा एक फ़िरक़ा दूसरे के साथ युद्धरत था । ख़ूब-ख़ून ख़राबा हो रहा था और किसी का जीवन सुरक्षित नहीं था । पोलैंड के रोमन कैथोलिक फ़िरक़े के हाथों आर्थोडोक्स फ़िरक़े पर होने वाले अत्याचारों का वर्णन अंताकिया के पीटर ऑफ़ यार्क मिस्टर मैकारयूस (सातवीं शताब्दी) ने इन शब्दों में किया है :

"हम उन हज़ारों शहीदों पर ख़ून के आंसू रोते हैं, जो इन चालीस-पचास वर्षों में ज़ालिम रोमन कैथोलिक पापाचारियों धर्म के शत्रुओं के हाथों क़त्ल हुए । इन शहीदों की संख्या 70 हज़ार के लगभग है । ऐ ग़द्दारो ! ऐ नापाक पापाचारियों ! ऐ पत्थर के दिल रखने वालो ! मैं तुम से पूछता हूं कि गिरजों में इबादत करने वाली राहिब स्त्रियों का जुर्म क्या था ? गृहस्थ स्त्रियों से क्या पाप हुआ था ? बच्चों, लड़कियों और छोटी बच्चियों ने क्या ग़लती की थी ? तुमने उनको क्यों क़त्ल कर डाला ? मैं उन्हें क्यों न पोलैंड का शैतान कहूं ? जबकि उन्होंने अपने व्यवहार से अपने आपको उन पापी बुतपरस्तों से भी ज़्यादा कठोर हृदयता का व्यवहार करने वाला सिद्ध कर दिखाया, जिन्होंने ईसाइयों पर आमानवीय अत्याचार किये थे । उन्होंने मसीही धर्मावलंबियों पर अत्याचार करते हुए शायद यह समझा हो कि इस प्रकार आर्थोडोक्स पंथ का नाम व निशान मिटा देंगे । अल्लाह तुर्कों की हुकूमत को क़ियामत तक बाक़ी रखे, जो अपनी प्रजा से कर (जिज़्या) लेते हैं और जिन्हें दूसरे धर्मों से कोई बैर नहीं । चाहे उनकी प्रजा ईसाई हो या नसरानी, यहूदी हो या

क़ादिरी दवाख़ाना की कामयाब यूनानी दवाएं

DIAL
033-2469-3173
033-2489-3539



किसी भी प्रकार के दर्द, चोट, मोच, गठिया, जलने, कटने और बच्चों की मालिश में बहुत ही लाभदायक।



जाफ़रानी तेल®

गैस्टिक के दर्द में?

क़ब्ज़ ट्रोजन

अनपच, भूख की कमी, जिगर का दर्द, क़ब्ज़, सीने की जलन और पेटी की सभी बीमारियों में बहुत ही लाभदायक।



Qadri Dawakhana
B-18, NAWAB WAJID ALI SHAH ROAD, KOLKATA - 24,

DISTRIBUTORS:
DARYA BADI DAWAKHANA 393, E. R. Road, Pydhonie, Mumbai - 400 003 Ph: 022-2341-1957.
RELAX ENTERPRISES 3416, Bahishti Wada, No.1, Dhule, - 424 001 Ph: 02562-236952

सामरी । लेकिन पोलैंड के ईसाई शैतानों ने मसीही भाइयों से केवल टैक्स लेने पर ही बस नहीं किया, बल्कि उन्होंने मसीहियों को ज़ालिम यहूदियों के पंजों में दे दिया, जो हज़रत मसीह के दिली शत्रु हैं और जिन्होंने ईसाइयों को एक भी कनीसा बनाने की अनुमति नहीं दी और न ही मसीहियों के लिए कोई ऐसा पादरी छोड़ा, जो उनको उनके धर्म की शिक्षा दे ।''

यहां हमने सुल्तान मुहम्मद के उस व्यवहार का संक्षिप्त वर्णन किया, जो उसने कुस्तुनतुनिया के ईसाइयों के साथ किया । अब ज़रा ईसाइयों का वह व्यवहार भी सुन लीजिए, जो उन्होंने 1204 ई॰ में कुस्तुनतुनिया पर क़ब्ज़े के बाद अपने भाई आर्थोडोक्स ईसाइयों के साथ किया । इसका उल्लेख हम अपनी भाषा में नहीं करते, बल्कि आप पोप सेंट तृतीय की ज़ुबानी सुनिए, वह लिखते हैं :

''मसीह के अनुयायियों और उसके धर्म के पक्षधरों का फ़र्ज़ तो यह था कि वे अपनी तलवारों का रुख़ मसीहियत के बड़े शत्रु (अर्थात् मुसलमानों) की ओर फेरते, लेकिन अफ़सोस कि उन्होंने ख़ुद ईसाइयों का ख़ून बहाया, जिसका बहाना उनके लिए धार्मिक रूप से हराम था, लेकिन उन्होंने इसकी कोई परवाह नहीं की और ख़ून के दरिया बहाये और न धर्म का कोई सम्मान किया, न स्त्रियों व पुरुषों में कोई भेद बाक़ी रखा और न बच्चों-बूढ़ों व जवानों में कोई भेद किया । उन्होंने दिन-दहाड़े (ईसाई) स्त्रियों की इज़्ज़तें लूटीं । राहिब (संन्यासी) स्त्रियां, बच्चों वाली माताएं और युवतियां उनकी इस कामांधता के सामने विवश थीं और इस लश्कर के दरिन्दों ने उनको नोचा-खसोटा व गंदा किया । इन लोगों ने बादशाह तथा दूसरे धनवान लोगों का धन-दौलत लूटने पर ही बस नहीं किया, बल्कि गिरजों को भी ख़ूब लूटा, उनका अपमान किया, उनमें बदकारियां की तथा उनकी पवित्र मूर्तियों, तस्वीरों, सलीबों व अन्य पवित्र चीज़ों तक को लूटा ।''

प्रसिद्ध इतिहासकार शार्लडील लिखता है :

''यह ईसाइयों का मस्त लश्कर गिरजे में दाख़िल हुआ, पवित्र पुस्तकों को नष्ट किया, शहीदों के चित्रों को अपने पैरों से रौंदा । एक बदकार स्त्री वहां पीटर ऑफ़ यार्क की पवित्र कुर्सी पर बैठी और ऊंची आवाज़ से गाने लगी । नगर से धर्म-ज्ञान के सारे प्रतीक और स्रोत मिटा डाले गये और सोने, चांदी से बने हुए मुजस्समों को तोड़ा गया, ताकि उनसे सिक्के ढाले जा सकें । और इन बरबरतापूर्ण अत्याचारों व अधार्मिकता के प्रत्यक्षदर्शी राहिब यूं गवाही देते हैं, ''वास्तविकता यह है कि मुहम्मद के पैरोकारों ने इस नगर के साथ वैसा व्यवहार नहीं किया था, जैसा ख़ुद मसीह के नाम लेवाओं और अनुयायियों ने कर दिखाया ।''

कुछ लोग पाश्चात्य सभ्यता के इस अमानुषीय व्यवहार के लिए यह दलील पेश करते हैं कि मध्यकाल में यह जातियां इतनी सभ्य नहीं थीं कि उनसे किसी बेहतर व्यवहार की आशा की जा सकती । लेकिन हम पिछले दो विश्व युद्धों में और उनके साम्राज्य में जकड़े हुए देशों में उनको यही इतिहास दोहराते हुए देखते हैं । हालांकि अब ये सभ्यता के ठेकेदार बने बैठे हैं । वास्तविकता यह है उनकी जो फ़ितरत पहले थी वही आज भी है । उनमें कोई अन्तर नहीं आया है । पहले उनकी यह बर्बर प्रवृत्ति धार्मिक पक्षपात का रूप धारण करके सामने आयी थी, तो उनके इस जंगलीपन का बोझ धर्म को उठाना पड़ा था और आज उनकी वही अमानुषता व संगदिली सभ्यता का चोला पहनकर सामने आयी है । अत: शांति व सुरक्षा, सभ्यता व संस्कृति को उनकी कठोर हृदयता और इन्सानियत दुश्मनी का बोझ उठाना पड़ रहा है । लेकिन हैरत की बात यह है कि वे इस्लामी राज्य के विस्तार व उसके शासन पर दोषारोपण करते हुए नहीं थकते और ख़ुद अपनी सभ्यता को मानवता के लिए रहमत बताते हैं, हालांकि वास्तविकता बिल्कुल इससे उलटी है ।

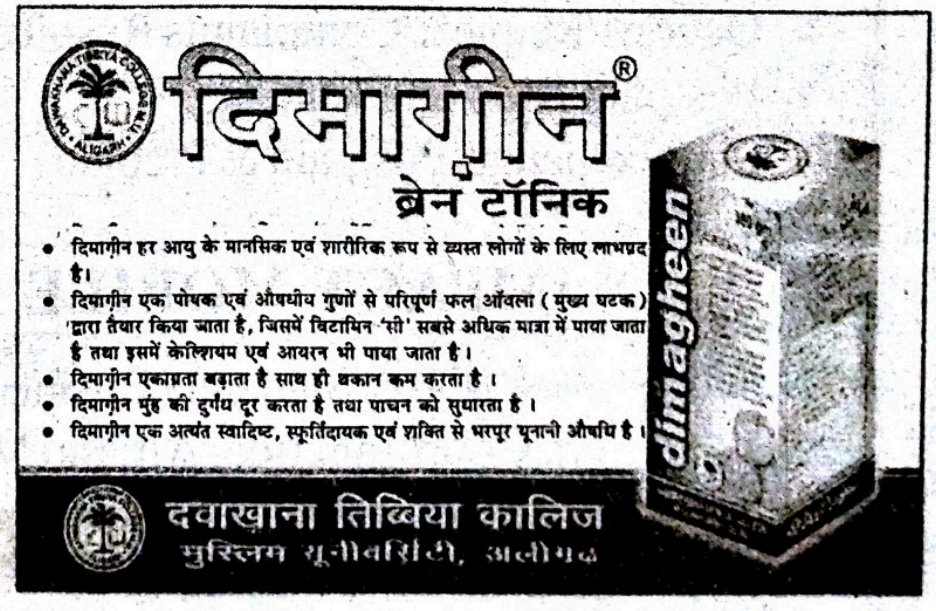

SERVICES OFFERED AT

Prop. : Yacub Shaikh

my **Idea**
Authorised Centre

PRODUCTS

- Postpaid Connection
- Attractive tariffs on Individual & Group connections
- Prepaid Connection
- Blackberry Connection
- 3G Net Setter
- VAS products & GPRS Packs
- E-Recharges
- Prepaid to Postpaid Migration
- Postpaid to Prepaid Migration

SERVICES

- Postpaid bill payment-Cash/Credit Card/Cheque
- Prepaid Recharge
- Service change requests
- Queries/Request/Complaints Resolution
- Postpaid Bills on E-mail
- Sim Exchange-Postpaid & Prepaid

IMPACT MOBILE SERVICE

E-10, Saldanha Business Towers
Nr. Court Junction, Altinho Mapusa-403 507

Also repairs Mobiles out of Warranty

पढ़ने का तरीक़ा भी महत्वपूर्ण

काफ़ी सारे युवा चाहे वह किसी प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे हों या फिर जो स्कूल कॉलेज की परीक्षाओं में अच्छे अंक लाने के प्रयास में हो, वे सब ख़ूब पढ़ते हैं । लेकिन कई बार ख़ूब पढ़ने पर भी उन्हें मन वांछित सफलता प्राप्त नहीं होती, तब उनमें से अधिकतर निराश हो जाते हैं । अधिकांश का कहना होता है कि इतना पढ़ने पर भी कुछ नहीं हुआ । इससे तो अच्छा है कि पढ़ना ही छोड़ दिया जाए, लेकिन ऐसा कहने वालों को अपनी अध्ययन शैली पर भी ध्यान देना चाहिए । सिर्फ़ पढ़ना और पढ़ने में वक़्त गुज़ारना ही पर्याप्त नहीं है । पढ़ने का तरीक़ा और शैली भी महत्वपूर्ण है । अगर आप मन से पढ़ाई नहीं कर रहे हैं या आपके लिए पढ़ाई मजबूरी है तो आप इससे कुछ भी ग्रहण नहीं कर पाएंगे ।

दरअस्ल देखा जाए तो अध्ययन हमारी दिनचर्या, हमारी जीवनशैली में कई रूपों से जुड़ा हुआ है । स्कूल-कॉलेज के पढ़ाई के साथ ही साथ घर पर की गयी पढ़ाई जीवन में हमारी सफलता का सोपान बनती है ।

अध्ययन की भूमिका को कैरियर निर्माण और व्यक्तित्व विकास में किसी भी तरह से नकारा नहीं जा सकता, यदि आप जीवन में प्रगति करना चाहते हैं । ज्ञान के क्षेत्र में कुछ करना चाहते हैं तो आपको अन्य प्रयासों के साथ ही साथ अपनी अध्ययन शैली को भी कारगर बनाना पड़ेगा ।

अक्सर आपको अध्ययन संबंधित आदतों के बारे में सुधार की सलाह आपके माता-पिता, शिक्षकों से मिलती ही रहती होगी । वैसे आजकल पत्र-पत्रिकाओं में ही इस तरह के सलाह पढ़ने को मिल जाती है । लेकिन पढ़ाई के बोझ और भय़ से विद्यार्थियों पर किसी भी दी सीख कारगर नहीं लगती जिससे वे लीक से हटकर नहीं सोच पाते ।

अध्ययन शैली कारगर बनाना थोड़ा मुश्किल ज़रूर है पर असंभव नहीं । इसमें कुशलताओं का बारीकी से विश्लेषण करना पड़ता है । शुरुआत अध्ययन के प्रति लगन से की जा सकती है । इसके लिए आपको ख़ुद को अनुशासित करना होगा और ऐसे लालच, जिनकी वजह से ध्यान बंटता हो से प्रभावित होने से बचना होगा । पढ़ाई के मामले में अनुशासन को अपनाकर विद्यार्थी अध्यव्यासी होने के महत्व को समझेगा और ठीक परीक्षा, के समय उसे शार्ट कट से अपना कोर्स पूरा करने की नौबत नहीं आएगी । यह तरीक़ा शुरू में थोड़ा-सा कष्टदायक हो सकता है लेकिन आगे चलकर इसके लाभ भी तो हैं ।

इस तरह की अध्ययन शैली से निर्णय करने की क्षमता का विकास होता है क्योंकि विद्यार्थियों में अपनी प्राथमिकताएं तय करने की समझ आती है और उनकी विश्लेषणात्मक क्षमता प्रखर जाती है । सबसे महत्वपूर्ण बात होती है कि वह समय का सदुपयोग करना सीख जाता है क्योंकि वह उपलब्ध समय को अध्ययन, खेलकूद, रुचियों जैसे कार्यकलापों के बीच बांट कर संतुलित दिनचर्या बनानी होती है । यह सब उसमें एक नये तरह का आत्मविश्वास पैदा करता है ।

अध्ययन करना और अध्ययन की हुई बात का मनन करना दो अलग-अलग चीज़ें हैं, यानी आपकी नज़रें तो किताब पर है लेकिन दिमाग़ टी०वी० में आ रहे क्रिकेट मैच में चल रहा है कि अभी कितने रन हो गये होंगे या कितने विकेट उड़ गये होंगे । तो आप इससे शायद ही कुछ ग्रहण कर पाएं ।

कुछ लोग अक्सर एक पंक्ति या पैराग्राफ़ को बार-बार पढ़ते हैं यह दुहराव पंक्ति या पैराग्राफ़ में छिपे गहरे अर्थ को समझने का हो, तब तो ठीक है लेकिन अगर पढ़ाई मन से नहीं की जा रही हो तो पांच-छह घंटे की पढ़ाई की भी व्यर्थ है इसके बजाय बिल्कुल मन लगाकर की गयी एक घंटे की पढ़ाई ही काफ़ी है ।

अध्ययन शैली विकसित करते समय सिर्फ़ और सिर्फ़ अपने कैरियर पर नज़र रखें, हर जगह अलग-अलग तरह की परीक्षाओं का आयोजन होता है जो कई मायनों में स्कूल व कॉलेज की परीक्षाओं से अलग होती है और इनमें वे लोग ही ज़्यादा सफ़ल होते हैं जिनके अध्ययन में गहराई हो और जिनके निर्णय जल्दी होते हों और विश्लेषण करने जैसी क्षमताओं से युक्त हों, रटने वाले लोग यहां पिछड़ जाते हैं ।

मानवता के आदर्श हज़रत मुहम्मद (सल्ल०)

❖ माहिरुल क़ादरी

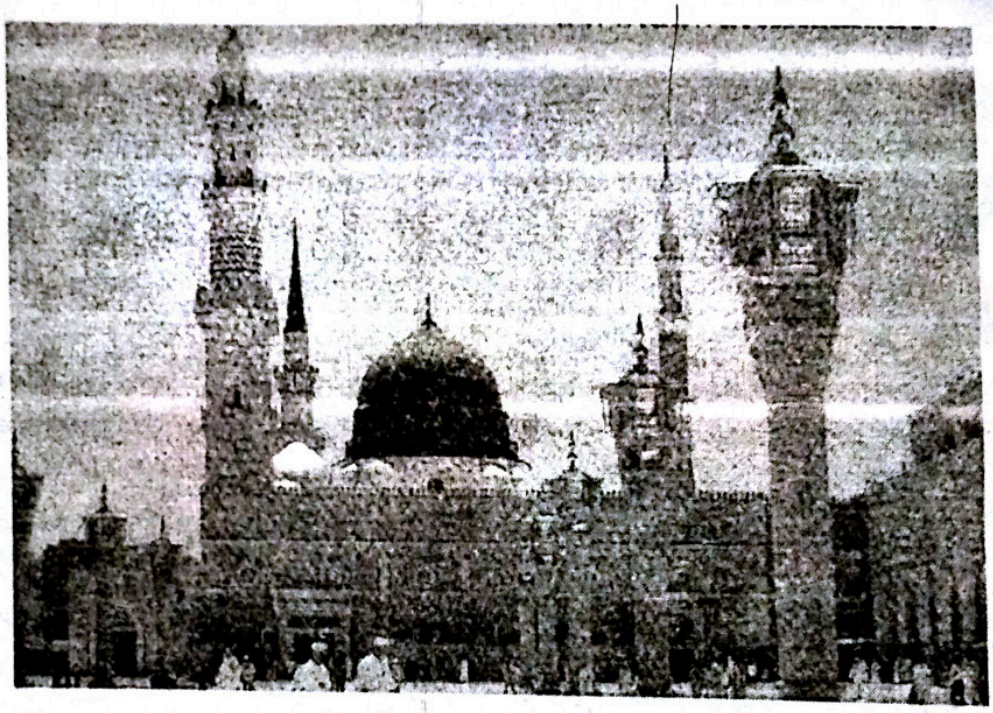

सत्य का विरोध : सत्य को स्वीकार करने के मार्ग में पारिवारिक पक्षपात, बाप-दादों के संस्कार और रीति-रिवाज सदैव रोड़ा बनते हैं। अच्छी सूझ-बूझ वाले भी इस ग़लती का शिकार हो जाते हैं कि जो बात चिरकाल से चली आ रही है, वह बात ठीक है, सही है, जायज़ है। लोग सत्य और न्याय को बाप-दादा के मान-जान की कसौटी पर परखना चाहते हैं। मानव-स्वभाव की इस दुर्बलता ने सच्चाई को मानने में सदा ही रुकावटें पैदा की हैं और रोड़े अटकाये हैं। समस्त समाज-सुधारकों और सत्य के पुजारियों को प्रायः इन्हीं समस्याओं तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है।

हज़रत इबराहीम (अलैहि०) ने जब एकेश्वरवाद का स्वर उच्चरित किया तो चांद व सितारों और मूर्तियों को पूजने वाली क़ौम इस बात पर बिगड़ गयी कि ! आज़र का यह बेटा हमारे पुरखों से भी अधिक बुद्धिमान और सत्यवादी बनता है। इतने बड़े-बड़े पदों वाले महात्मा और गुरु क्या बिल्कुल नासमझ थे। शताब्दियों से हम जिस मार्ग पर चलते आये हैं क्या इबराहीम के कहने पर उसे छोड़ दें ? पूरी क़ौम ने हज़रत इबराहीम (अलैहि०) का उपहास किया। उनके संदेश को झुठलाया और स्वयं उनके घर के लोग इस विरोध में आगे-आगे थे।

हज़रत मूसा (अलैहि०) के साथ भी यही पेश आया, फ़िरऔन जिस क़ौम का ख़ुदा था उसने हज़रत मूसा का घोर विरोध किया। उन लोगों को शाह परस्ती का रोग था। जो व्यक्ति सिंहासनासीन होता, ख़ुदाई का दावेदार भी बन बैठता। बादशाहों के दरबारों में सजदे होते और दमन-चक्र की शिकार जनता बादशाह को ख़ुदा का साया नहीं, बल्कि ख़ुदा ही समझती थी।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जिस जाति से संबंध था, वह पितृ पूजा में पिछली जातियों से कोसों आगे थी। अपने पुराने संस्कारों के विरुद्ध जब उन्होंने सच्चाई की बातें सुनीं तो पूरी की पूरी जाति विरोध पर उतारू हो गयी। आपका चचा अबू लहब इस्लाम के शत्रुओं और रसूल (सल्ल०) के विरोधियों का अगुआ था। इस भाग्यहीन व्यक्ति का तो दिन-रात काम ही यही था कि आप (सल्ल०) जहां कहीं भी तशरीफ़ ले जाते, वह भी साथ-साथ हो लेता या पहले ही पहुंच जाता। आप लोगों को समझाते, सत्य और न्याय का पाठ पढ़ाते, भलाई का प्रचार करते, तो अबू लहब आपका विरोध करता। कुरैश से कहता कि

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के पवित्र जीवन के कुछ पृष्ठ

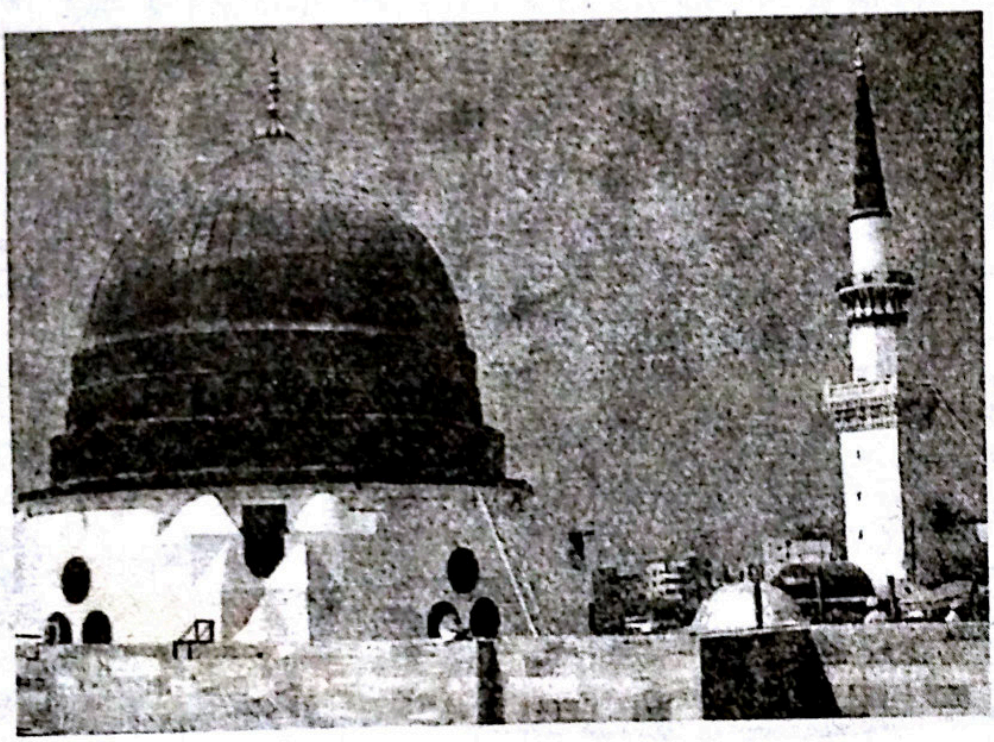

लोगो! कहीं अब्दुल्लाह के बेटे की बातों में आकर अपने प्राचीन धर्म से विमुख न हो जाना । यह मेरा भतीजा तो (अल्लाह की पनाह) विधर्मी हो गया है । यह कैसे हो सकता है कि हम अपने उपास्यों को छोड़ दें, जिन्होंने हर कठिन घड़ी में हमारा साथ दिया है । शताब्दी से हमारे पुरखे जिन मूर्तियों की पूजा करते आये हैं क्या इस एक आदमी के कहने से उनको ठुकरा दें ? यह नहीं हो सकता, कभी नहीं हो सकता । जब तक मेरी जान में जान है, लात, मनात और नस्र, हुबल की महत्ता को कम नहीं होने दूंगा । और हां ! यह मुहम्मद आख़िरत (परलोक) के अज़ाब से लोगों को प्राय: डराता रहता है । समझ में नहीं आता कि यह आख़िरत क्या बला है ? मरने के बाद फिर क्या कभी कोई ज़िंदा हो सकता है ? ये सब नासमझी की बातें हैं और भाइयो ! सौ बातों की एक बात यह है कि अनदेखी हुई बात को हम आख़िरत कैसे मान लें ? हम तो इस बात को जब सच्चा जानें कि अपने खुदा से हमारी बातें करा दे । यह न हो कि सके तो कम से कम आसमान से आवाज़ें आएं कि अब्दुल्लाह का बेटा खुदा का भेजा हुआ है और उसकी बात पर दुनिया को ईमान ले आना चाहिए ।

और एक अबू लहब ही क्यों, तमाम कुरैश यही कहते थे कि यह मुहम्मद खुदा का कैसा नबी है, जो हमारी तरह खाता-पीता और बाज़ारों में चलता-फिरता है । इसके बाल-बच्चे भी हैं । दुनिया की ज़रूरतें भी इसके साथ लगी हुई हैं । रसूल भेजना ही था तो मक्का या तायफ़ के किसी धनी-मानी व्यक्ति को भेजना चाहिए था । अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद के घर में तो बैठने के लिए चटाई भी नहीं है । कई-कई दिन का उपवास होता है उनके घराने में भला ऐसे दीन-हीन व्यक्ति को नबी मानकर हमें क्या मिल जाएगा ? जिन लोगों ने मुहम्मद को अपना मार्गदर्शक स्वीकारा है, उनमें अधिकांश धनहीन, नीच और परेशान व्यक्ति ही हैं । किसी-किसी के पास तो शरीर ढांपने के लिए कपड़े भी नहीं हैं । क्या हम भी मुहम्मद के अनुयायियों में शामिल होकर उन्हीं जैसे बन जाएं ? और भाइयो ! अब्दुल्लाह के बेटे के विचारों को मानने का अर्थ यह है कि तमाम कुरैश का विरोध मोल ले लें, अपने नातेदारों और सगे-संबंधियों से संबंध विच्छेद कर लें । यह सौदा बड़ा महंगा पड़ेगा, बल्कि इसमें घाटा ही घाटा है ।

वे लोग एक-दूसरे से यह भी कहते हैं कि निस्संदेह मुहम्मद अति सच्चे, वादे के पक्के और ईमानदार हैं । उनके चालीस वर्ष हमारे ही साथ बीते हैं और आज तक कोई बुरी

मदद के लिए अपील

जामिया मिस्बाहुल उलूम चौकोनियां, पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक जाना-माना तालीमी इदारा है। यह इदारा सिद्धार्थ नगर ज़िला के ग्रामीण क्षेत्र में है। यहां लगभग सभी राज्यों और पड़ोसी देश नेपाल के छात्र तालीम हासिल कर रहे हैं। यह इदारा आधी सदी से तालीम व तर्बियत के मोर्चे पर मुस्लिम समाज की सेवा कर रहा है। यहां प्राइमरी से लेकर आलिमीयत तक की तालीम का पूरा इन्तिज़ाम है। यहां दीनी और अस्री उलूम को एक ख़ास इम्तिज़ाज के साथ सिमोया गया है, जिसके कारण जामिया को तालीमी मैदान में एक अलग और प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त-है। यहां क़याम और तआम की सारी सहूलतें उपलब्ध हैं। जामिया मिस्बाहुल उलूम की विशेषता तालीम के साथ इस्लामी बुनियादों पर छात्रों की मिसाली तर्बियत करना है।

जामिया के मंसूबे

● मर्कज़ी लाइब्रेरी की तामीर ● जामिया की मस्जिद के अधूरे कामों को पूरा करना ● लड़कियों के लिए अलग दर्सगाह की तामीर ● टेक्निकल सेन्टर का क़याम ● होस्टल की तामीर ● अनाथालय की तामीर ● फैमिली क्वार्टर्स की तामीर

अह्ले ख़ैर हज़रात से दरख़्वास्त है कि जामिया की दिल खोलकर मदद करें और अल्लाह के यहां उसका बदला पाएं।

—: भेजने का पता :—

जामिया मिस्बाहुल उलूम

चौकोनियां भारत भारी, सिद्धार्थनगर-272191

फ़ोन : 09450587737, 09793424547

जामिया का बैंक खाता नं०

A/c No. 30290663653 S.B.I. डुमरियागंज, कोड-1250

बात उनमें देखने को न मिली । उनके आचरण पर कोई उंगली भी नहीं उठा सकता । ऐसा सज्जन, सुसभ्य और सत्यवादी व्यक्ति तो हमारे अरब में दूसरा नहीं है । मक्का की गलियां, क़बीस की चोटियां, सफ़ा की चट्टानें और काबे की मेहराबें इस अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद के सदाचरण की गवाही देती हैं । उनकी अब तक की सभी बातें भली ही भली रही हैं । बड़े गुण हैं उनमें, पर कुछ दिनों से उन्होंने हमारी मूर्तियों की निंदा करनी शुरू कर दी हैं, यह हमें पसन्द नहीं है ।

'पर मैं कहता हूं अब्दुल्लाह के बेटे सदा से हमारी मूर्तियों के विरोधी रहे हैं', एक कुरैशी ने कहा ।

'नहीं यह बात नहीं है'–दूसरे व्यक्ति ने उत्तर दिया ।

'अरे साहब ! आप तो निरे कल्पना लोक में विचरण कर रहे हैं । और क्षमा कीजिए अदूरदर्शी भी हैं । मुहम्मद के पिछले जीवन पर एक दृष्टि तो डालिए । स्थिति स्पष्ट हो जाएगी और आपको मानना पड़ेगा कि मैं सच कह रहा हूं ।' बूढ़े व्यक्ति ने कहा ।

'अच्छा, कुछ कहिए तो सही । दूसरे व्यक्ति ने उत्तर दिया ।

'किसी व्यक्ति के विचार, उसके कार्य, चरित्र-आचरण और जीवन से जाने-पहचाने जाते हैं । क्या आपने लड़कपन में मुहम्मद को किसी मूर्ति के पास फटकते भी देखा ? (सुनने वाला 'न' के लिए सर हिलाता है) और युवावस्था में यहां तक कि सफ़ा पर्वत पर इस्लाम का आह्वान करने तक मुहम्मद के ध्यान को मूर्तियों की ओर तनिक भी आकृष्ट होते देखा गया ? (फिर सिरों का नकारात्मक संकेत में हिलाना) तो फिर इसका अर्थ यही निकला कि मुहम्मद ने खुलकर घोषणा तो अब की है पर व्यावहारिक दृष्टि से वह सदैव ही मूर्ति पूजा का विरोधी रहा है । आपको मालूम न हो तो लाओ, मैं बताऊं ! ज़ैद बिन अम्र बिन नुफ़ैल ने मुहम्मद को एक बार भोज पर बुलाया था । गोश्त के डोंगे जब सामने आये तो उसने झठ से यह कहकर हाथ पीछे खींच लिया कि मूर्तियों और थानों पर चढ़ाया हुआ गोश्त मैं नहीं खाता । मैं तो उस जानवर का गोश्त खाता हूं जो खुदा का नाम लेकर ज़िब्ह किया गया हो । हम तो उसी दिन समझ गये थे कि यह व्यक्ति एक दिन कोई रंग लाएगा । और भाई ! यह अब्दुल्लाह का बेटा तो हमारी रीतियों, संस्कारों और मेलों-ठेलों तक का विरोधी रहा है । पिछले वर्षों में कैसे-कैसे गाने-बजाने होते रहे हैं ! हसीन की दासी रफ़ावा के नृत्य-गान पर नब्बे-नब्बे साल के बूढ़े झूम-झूम गये हैं और आसिम की बेटी के सरोद वादन ने आंखों की नींदें उड़ा-उड़ा दी हैं । सारा मक्का इन महफ़िलों में शरीक हुआ पर मुहम्मद की परछाई भी वहां देखने को न मिली । मदिरापान हम अरबों की घुट्टी में पड़ा हुआ है । हम जामों की खनखनाहट के बिना एक रात भी नहीं बिता सकते पर अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद को मदिरापान की किसी टोली में भी नहीं देखा गया । मैं अपने उपास्यों की सौगंध खाकर कहता हूं कि मुहम्मद ने आज तक शराब के जाम को छुआ तक नहीं । तो आख़िर इससे क्या निष्कर्ष निकलता हैं ?''

'आप ही व्याख्या कर दें तो अच्छा है', एक आवाज़ आयी ।

'जिस प्रकार दो ऊंट और दो ऊंट चार ऊंट होते हैं, उससे न कम हो सकते हैं न अधिक, वैसे ही यह एक मान्य तथ्य है कि मुहम्मद हमारे धर्म, संस्कृति, समाज और नीति-रिवाज का सदा से विरोधी रहा है । उसे हमारी यह सभ्यता एक आंख भी नहीं भाती । उसका जीवन हम सब के जीवन से भिन्न रहा हैं । अपनों में रहकर यह अनजानापन, विरोध, विमुखता और दूरी और घृणा नहीं तो और क्या है ?' कहने वाले की बातों पर एक साथ कई सिर हिले कि तुम ठीक कह रहे हो ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने 'लाइलाह इल्लल्लाह' (नहीं है कोई उपास्य अल्लाह के अतिरिक्त) का नारा लगाकर कुफ़्र व इन्कार के महलों को कंपकंपा दिया । जहां-जहां यह स्वर गुजरित हुआ, शिर्क और जुल्म के पोषक थरथरा उठे । अबू जहल और अबू लहब भड़के कि हमारी चौधराहट छिनी जा रही है । अबू सुफ़ियान थर्राया कि मेरी सरदारी को चुनौती दी जा रही है । वंश, वर्ण और रक्त तथा रंग पर गर्व करने वाले डरे कि हमारे अभिमान को ठेस पहुंचाई जा रही है । काहिनों (भविष्य वक्ताओं), राहिबों (सन्यासियों), जादूगरों, पुरोहितों और पुजारियों को पसीना आ गया कि हमारी धर्म गुरुता को इस सूत्र ने ख़तरे में डाल दिया है । मनोकामनाओं और इच्छाओं के पुजारी

भयभीत हुए कि उनकी मनमानियों के विरुद्ध यह मोर्चा बन रहा है । हमारे भोग-विलास के सारे सहारे टूट जाएंगे और वासनाओं के ताने-बाने बिखर कर रह जाएंगे । जो जितना अधिक बुरा और सच्चाइयों से जितना दूर था उसे उतना ही अधिक भय लग रहा था । सच्चे खुदा का नाम उच्चरित होते ही हर झूठा खुदा और बनावटी उपास्य कांप कर रह गया ।

मक्का के कुरैश, यमन व शाम (सीरिया) और दूसरे देशों में व्यापार के लिए जाते और अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के नबी होने और आपके संदेश की चर्चा करते तो सुनने वाले आप ही आप सोच में पड़ जाते, उनके मन में यह भाव जाग्रत होता कि यह क्रांति मानो हमारी ओर भी बढ़ी चली आ रही है और इसकी सीमाओं से हम अछूते नहीं रह सकते ।

इन तमाम विरोधों, शत्रुताओं और कठिनाइयों के बाद भी खुदा का सच्चा नबी सत्य की घोषण कर रहा था, कोई विरोध उसके दृढ़ निश्चय में तनिक भी ढील पैदा नहीं कर सकता था । वह सत्य, न्याय और दृढ़ता की प्रतिमूर्ति था । ये तमाम आँधियां उसे डिगा न सकीं । उसके संदेश का दीपक आँधियों की गोद में भी जलता रहा और तूफ़ान की धार पर भी विकसित होता रहा । विजय उसके पांव छू रही थी ।

कुरैश विरोधी होने के बावजूद भी बड़े असमंजस्य और घुटन में पड़े थे । उनकी अन्तरात्मा से आवाज़ आती कि मूर्खो ! जिसे तुम लड़कपन से सच्चा कहते आये हो और जिसके मुख से किसी के कान ने एक अक्षर भी ग़लत व झूठ नहीं सुना, आज उसी को किस तर्क के आधार पर झूठलाते हो ? यह कैसे संभव है कि एक व्यक्ति जो चालीस वर्ष तक सदा सच बोलता रहा हो और अब एकाएक ही झूठ बोलने लगे और वह भी किसी निजी स्वार्थ या निजी लाभ के लिए नहीं ? वह तुम से धन-दौलत नहीं चाहता, सरदारी और बादशाही की तलब नहीं रखता । केवल 'तौहीद' (एकेश्वरवाद) के एक सूत्र पर तुम्हें जमा करना चाहता है । पर जब बाप-दादा के संस्कार और क़ौम के रस्म व रिवाज का ध्यान आता तो अंतरात्मा से निकला हुआ यह स्वर दबकर रह जाता ।

कुरैश ने मिल-जुलकर अल्लाह के रसूल मुहम्मद (सल्ल॰) से मांग की :

1. आप जब खुदा के सच्चे नबी हैं और खुदा आपकी हर बात मानता है तो मक्का के सामने जो पहाड़ खड़े हैं, जिन्होंने सारे शहर को ढांप और घेर रखा है, उन्हें अपने खुदा से कहकर हटवा दीजिए ताकि हमारे शहर के आसपास का वातावरण खुला-खुला हो जाए ।

2. इराक़ और शाम के निवासी कितने भाग्यवान हैं कि उनके देशों में नदियां बलखाती हुई चलती हैं जिनके कारण वहां की धरती हरी-भरी और उपजाऊ है । आप भी अपने खुदा से दुआ कीजिए कि कुछ नहरें हमारे देश में भी जारी हो जाए ।

3. आप कहा करते हैं कि मृत्यु और जीवन खुदा के हाथ में है तो फिर अपने खुदा से कहिए कि हमारे बाप-दादाओं को जीवित कर दे और हां ! देखिए, एक बात का विशेष ध्यान रहे । वह यह कि हमारे पुरखों में कुसई बिन किलाब को तो जैसे-तैसे अवश्य ही जीवित करा दीजिए । कुसई हमारा महान नेता था । उसने कुरैश के मान-सम्मान को बढ़ाया था और वह सच भी बोला करता था । बस ! हम कुसई से भी पूछ लेंगे कि क्या अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद सचमुच खुदा के रसूल हैं ? कुसई झूठ नहीं बोल सकता । सही-सही बात बताएगा । अपनी संतानों को कुसई जैसा सज्जन पुरुष धोखे और अंधेरे में नहीं रख सकता ।

4. और हां, मुहम्मद ! जीवन की आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए तुम्हें स्वयं बाज़ारों में जाना पड़ता है, अपनी पीठ पर लाद कर सौदा सामान लाना पड़ता है, रोज़ी-रोटी के लिए तुम्हें दौड़-धूप भी करनी पड़ती है । तुम्हारी आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं है और तुम्हारा मकान कच्चा और टूटा-फूटा है—न गर्मी में आराम देने वाला और न सर्दी में ज़रूरत के लिए काफ़ी—तो फिर तुम अपने खुदा से कहो कि ऐ मुझे नबी बनाकर भेजने वाले सामर्थ्यवान ! मेरे लिए शानदार महल बनवा दे । मेरे आसपास सोने-चांदी के ढेर लगा दे और मनोविनोद के लिए बाग़ उगा दे । और यह भी कहो अपने खुदा से कि मेरे साथ एक फ़रिश्ता कर दिया जाए ताकि वह लोगों से कहे कि यह आदमी अपने दावे का सच्चा है ।

कुरैश की इन मांगों में उनके छिछोरेपन की पूरी-पूरी झलक मिलती है, उनकी संकुचित दृष्टि और दुनियापरस्ती इसमें देखी जा सकती है । सच तो यह है कि उनके मन में दुनिया की रंगीनियां और धन तथा ऐश्वर्य छाया हुआ था । ऊंचे-ऊंचे महलों, सोने-चांदी के ढेरों और लहलहाते बाग़ों को ही उन्होंने सब कुछ समझ रखा था । मानवता और उसके गुणों का मूल्य वे जानते ही न थे । उन्हें नहीं मालूम था और अगर मालूम था, तो वे जान-बूझकर अनजान बन रहे थे कि सज्जनता, शालीनता, सत्यप्रियता और मानवता के लिए महलों की चकाचौंध और सोने-चांदी की तड़क-भड़क आवश्यक नहीं है । धन-दौलत की कसौटी पर किसी व्यक्ति की महानता को परखना सबसे बड़ी मूर्खता है और प्रकृति की यही रीति रही है कि सत्य और न्याय के दीप आरंभ में टूटे-फूटे मकानों और झोपड़ियों में ही जलते रहे हैं ।

कुरैश की इन मांगों के उत्तर में नबी (सल्ल०) के मुख से यूं निकला–

'मैं इन बातों के लिए नबी बनाकर नहीं भेजा गया । मैं अपने खुदा से ऐसी चीज़ें कभी न मांगूंगा । मुझे अल्लाह ने अपनी ही रहमतों की शुभ सूचना देने वाला और उसके अज़ाब से डराने वाला बनाकर भेजा है तुम मेरी बात मान लोगे तो लोक-परलोक में तुम्हारा भला होगा, वरना सब्र करूंगा और खुदा के फ़ैसले का इन्तिज़ार करूंगा ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के इस उत्तर पर कुरैश साश्चर्य एक दूसरे का मुंह तकने लगे । फिर ससंकोच बोले–'तुम्हें अपने सच्चे होने का इतना अभिमान है और खुदा पर इतना गर्व है तो तुम आसमान का एक टुकड़ा ही हम पर गिरा दो ।'

इसके उत्तर में आपने फ़रमाया कि खुदा चाहे तो ऐसा कर सकता है ।

इस पर ये लोग बोले कि जब तक तुम ऐसा न करोगे तो हम तुम पर ईमान लाने से रहे ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा कि यह खुदा के वश में है । वह चाहेगा तो ऐसा हो जाएगा ।

हज़रत उमर के इस्लाम लाने के बाद

मक्का के रहने वाले बड़े ही क्रूर हृदयी थे । कहा जा सकता है कि उनके दिल पत्थर की तरह कठारे थे । पर कुछ पत्थरों से तो पानी बरसने लगता है, यहां तक कि सोते (चश्मे) फूट निकलते हैं, और यहां तो कुरैश के दिलों में इतनी भी नम्रता न थी । प्रकृति ने उन्हें इससे भी वंचित कर दिया था । सन्मार्ग की ज्योति को देखकर उनके मन के भीतर के अंधकार को भय-सा होता था । उनके दिलों में सचमुच ताले पड़े हुए थे, आंखें थीं पर उनमें देखने की शक्ति न थी, कान थे पर वे सुनने में असमर्थ थे । मन चिंतन क्षमता ही खो बैठा था । मूर्खता की प्रतिमूर्ति, साक्षात् अज्ञानता और पथ-भ्रष्टता की चलती-फिरती मूर्तियां ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इन मूर्खों को तरह-तरह से समझाया, अति मनमोहक शैली अपनायी । खुदा के अज़ाब के डरावे को बार-बार दुहराया उनसे कहा कि यह दुनिया की ज़िन्दगी तो कुछ दिन की है, इस पर न इतराओ, अस्ल ज़िन्दगी तो मरने के बाद की ज़िन्दगी है । मरने के बाद अल्लाह तमाम जीवों को फिर से जीवित करेगा और क़ियामत के दिन हर एक के कर्मों का हिसाब-किताब होगा । अनेकेश्वरवादियों, अनीश्वरवादियों और अवज्ञाकारियों के लिए जहन्नम (नरक) बनायी है, जहां बड़ी दर्दीली यातनाएं दी जाएंगी और यही नहीं पिछली जातियों के विनाश की कहानियां भी सुनायीं कि उनके चेहरे और उनके रहने के मकान तक पहचाने न जाते थे । अल्लाह के अज़ाब ने जब उनको आकर पकड़ा तो कोई शक्ति उन्हें बचा न सकी । आंधी के एक झोंके और अज़ाब की एक चीख़ ने उन्हें मौत की नींद सुला दिया ।

सन्मार्ग और भलाई की इन बातों का कुरैश ने उल्टा उपहास किया । मूर्ख आपस में कहते कि अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद पर किसी ने जादू कर दिया है । कोई मत व्यक्त करता कि यह मुहम्मद जिसको वह्य बताता है बस अधिक से अधिक उच्च श्रेणी का काव्य है । इसमें कुछ भविष्य वक्ताओं की झलक भी मिलती है । सत्य का सूर्योदय हो चुका था पर अंधे उसके प्रकाश से वंचित थे । कुरैश अल्लाह के रसूल मुहम्मद के और आपके संदेश के विरोध में डटे हुए थे । पर इस विरोध के बाद भी उनके मन में भीतर से सिहरन पायी जाती थी । उनकी अंतरात्मा की आवाज़ थी कि यह सत्य का स्वर किसी के रोके से रुक

ہماری بعض اہم کتابوں کا پہلی بار

ہندی ایڈیشن

नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं? ✍ मौलाना सय्यद अबुल- आला मौदूदी	[نماز میں آپ کیا پڑھتے ہیں؟]	12.00
मुस्लिम औरतों की ज़िम्मेदारियाँ ✍ मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	[مسلمان خواتین کی ذمے داریاں]	20.00
भारत में इस्लाम की दावत की अहमियत और उसके तक़ाज़े ✍ मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	[ہندستان میں اسلام کی دعوت اہمیت اور تقاضے]	14.00
काबा का सफ़र ✍ मौलाना सय्यद जलालुद्दीन उमरी	[سوے حرم چلا]	24.00
प्यारे नबी (सल्ल०) की चहेती बेटियाँ ✍ फ़ज़्ले-क़दीर नदवी	[رسول اللہؐ کی صاحبزادیاں]	16.00
इस्लाम सफलता का एकमात्र रास्ता ✍ मौलाना सय्यद हामिद अली	[اسلام کامیابی کا واحد راستہ]	08.00
इशदूतत्व की धारणा विभिन्न धर्मों में	[مجموعہ مضامین]	20.00
प्यारे नबी (सल्ल०) के चार साथी-3 **हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि०)** ✍ इरफ़ान ख़लीली	[پیارے نبیؐ کے چار یار حضرت عثمان غنیؓ-حصہ سوم]	35.00
प्यारे नबी (सल्ल०) के चार साथी-4 **हज़रत अली (रज़ि०)** ✍ इरफ़ान ख़लीली	[پیارے نبیؐ کے چار یار حضرت علیؓ-حصہ چہارم]	30.00
ईश्वर की रहस्यमय हस्ती ✍ मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	[خدا کی پراسرار ہستی کا تصور]	14.00
हदीस सौरभ (अनुवाद एवं व्याख्या सहित) भाग-2 ✍ मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ	[کلام نبوت-جلد دوم]	350.00

MMI PUBLISHERS

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025 • Phone: 26971652, 26954341, 26946447(D) • Fax: 26947858 • E-mail:mmipublishers@gmail.com • Website: www.mmipublishers.net

नहीं सकता । इस सत्य संदेश में असाधारण शक्ति पायी जाती है । कट्टर से कट्टर विरोध भी इसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता ।

इस दमन चक्र के होते हुए भी मुहम्मद के मानने वाले भी निरुत्साह नहीं हो रहे थे । वे अडिग थे, निष्ठावान थे और सुदृढ़ संकल्प अपने मनों में संजोये हुए थे । भला ऐसे लोग कहीं निराश होते हैं ।

आरंभ में इस्लाम प्रचार की गति तेज़ न थी । सच्चाई धीरे-धीरे अपना प्रभाव दिखा रही थी पर जिस हृदय में भी यह स्वर रच-बस जाता उसे संसार की कोई भी शक्ति अपनी आरे झुका न सकती थी । ऐसा व्यक्ति संसार के हर काम को लात मार कर बस ख़ुदा और रसूल का हो लेता । उसका जीवन साक्षात इस्लाम बन जाता । इस्लाम की सेवा उसे हर ओर से उदासीन कर देती । वे साथी जो सबसे पहले इस्लाम की गोद में आ गये थे, उनकी संख्या बहुत कम थी । बस कुछ गिने-चुने लोग थे, जैसे आटे में नमक ! पर इस्लाम के लिए हर त्याग-भाव से ओत-प्रोत ।

ख़त्ताब के नामी बेटे उमर भी उन सौभाग्यशालियों में थे, जिनको बहुत पहले इस्लाम की दौलत मिल गयी थी । इस्लाम से पहले उमर सत्य धर्म के कट्टर शत्रु थे, एक दिन तलवार गले में डाल कर घर से निकले कि आज मुहम्मद (मेरे मुंह पर धूल) की हत्या करके इस झगड़े को ही समाप्त किये देता हूं । आदमी थे ही निर्भीक और साहसी बड़े-बड़े शूरवीर उमर से घबराते थे । इस्लाम के विरोधी कुरैश उमर के इस रवैये को देखकर अति प्रसन्न थे कि उमर की तलवार से अब पैग़म्बरे इस्लाम बच न सकेंगे । उनकी नंगी तलवार उस समय तक म्यान में जाती ही न थी जब तक कि अपने शत्रु के रक्त में न सन जाए । उमर अपने उद्देश्य में सफल हुए बिना वापस नहीं आएगा । हमारे उपास्यों का हाथ उस पर है । मुहम्मद कब से हमारे उपास्यों का उपहास कर रहे हैं, अब इसकी सज़ा उन्हें मिलकर ही रहेगी ।

उमर के हाथ में नंगी तलवार थी । अबू जहल हर्ष विह्वल होकर झूम रहा था, उत्बा की आंखें चमक रही थीं और अबू लहब यह सोच कर प्रसन्न था कि अब अब्दुल्लाह के बेटे का अंत निकट है । बस ! उसकी हत्या होते ही उसका लाया हुआ धर्म भी छिन्न-भिन्न हो जाएगा । उमर अपनी निर्भीक जवानी के नशे में चूर था कि मुहम्मद के साथियों में मेरा कोई मुक़ाबला न कर सकेगा । उसकी चाल तेज़ थी । इतने में मुहम्मद के एक साथी उसे रास्ते में मिले । उमर के निश्चय की सूचना पाते ही बोले कि उमर ! पहले अपने घर की तो ख़बर लो ! तुम्हारी बहन और बहनोई भी मुसलमान हो चुके हैं ।

उमर इस सूचना के सुनते ही सीधे अपनी बहन के घर पहुंचे ! चेहरा तमतमाया हुआ था और आंखों में ख़ून उतर आया था । उनकी बहन कुरआन पाठ कर रही थीं । दरवाज़ा बन्द था । उमर ने दस्तक दी और साथ ही पुकारा भी । बहन के कुरआन के उन अंशों को समेटा और छिपा दिया ।

उमर ने पूछा–'बताओ तुम क्या पढ़ रही थीं ?'

बहन ने बात छिपाना चाही । उमर क्रोध में जल उठा और बहन को ख़ूब पीटा । बहनोई ने बचाने का यत्न किया और वे भी इस चपेट में आ गये ।

उमर की बहन ने कहा–'उमर ! मैं मुसलमान हो चुकी हूं । ईमान अब मेरे दिल से नहीं निकल सकता, भले ही मुझे जान से मार डालो ।'

बहन के इस उत्तर पर उमर को क्रोध के बजाय आश्चर्य हुआ । वह कुछ सोचने लगा कि कैसा नशा है, जो लहूलुहान होने पर भी नहीं उतरा बल्कि और तेज़ हो गया ? कहने लगे–'जो चीज़ तुम मेरे आने से पहले पढ़ रही थीं, मुझे भी सुनाओ ।'

बहन ने कुरआन की आयतों का पाठ किया । एक-एक शब्द उमर के मन में उतरने लगा । आंखों में आंसू आ गये । ईशवाणी के प्रभाव ने उमर के भाग्य को बदल डाला । ईमान की पावन समीर जो चली तो उमर के कुफ़्र का दीप क्षण भर में बुझ गया ।

वह अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की सेवा में पहुंचे ।

आप उमर का गरेबान पकड़ कर मुस्कराये । उमर ने कलिमा पढ़ा और साथियों ने इस जोश के साथ 'अल्लाहु अकबर' का नारा बुलन्द किया कि मक्का की पहाड़ियां गूंज उठीं ।

मुहम्मद (सल्ल०) की एक मुस्कान ने उमर को सब

HUDA BUILDERS & DEVELOPERS

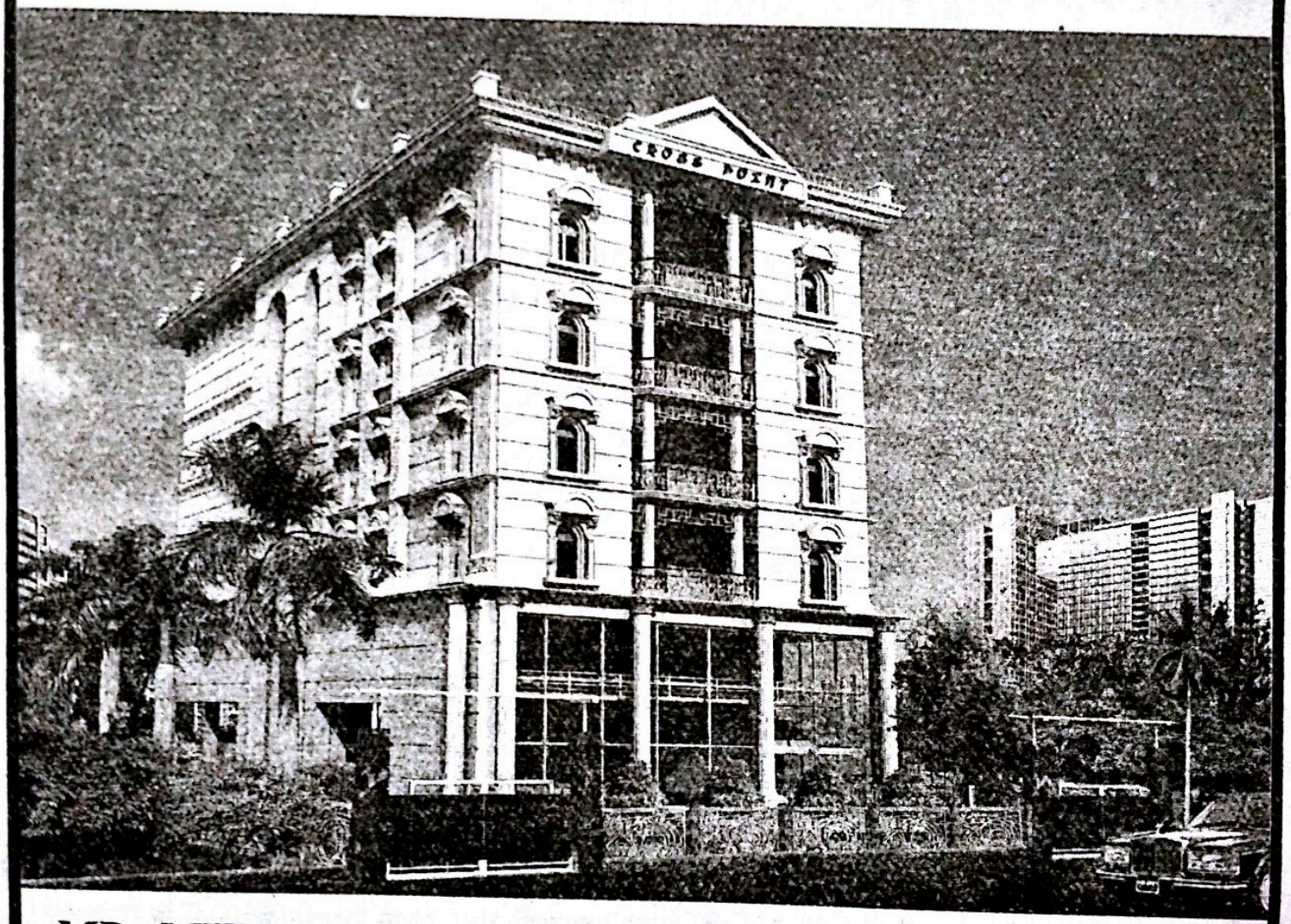

MD. MUKHTAR AHMED

MOBILE NO. : 9820127170

385, Sane Guruji Marg, Next to I.T.I College (Ghass Gali),
Mumbai-400011
Tel. No. : 23482660/23482688/23482762
Fax : 23484245

कुछ दे दिया था–संमार्ग, सौभाग्य, सफलता और उत्साह और वह सब कुछ जो एक ईश-प्रिय और सत्य खोजी को दिया जा सकता है ।

उमर, जो मुहम्मद को क़त्ल करने का निश्चय, करके चले थे जब वापस हुए तो मुहम्मद का दास बनकर वापस हुए थे ।

क़ुरैश तो इस प्रतीक्षा में थे कि उमर वापस आकर खुशख़बरी सुनाएंगे कि मैं अपने उद्देश्य में सफल हो गया । फिर हम सब मिलकर लात और हुबल की जय पुकारेंगे और इसके बाद अपने कानों से ख़दीजा का विलाप और अबू बक्र का चीत्कार, अली की सिसकियां और बिलाल हब्शी का रुदन सुनेंगे ।

पर प्रकृति उनके इन अरमानों पर हंस रही थी कि मूर्खो तमन्नाओं के जिन कमज़ोर खिलौनों से तुम दिल बहला रहे हो वे बहुत जल्द टूटने वाले हैं । तुम्हारी आशाओं के उपवन तो उजड़ सकते हैं, पर लहलहा नहीं सकते । तुम्हारी तमन्नाओं के महल धूल-धूसरित होकर रहेंगे । अपनी संख्या और शक्ति पर इतना मत इतराओ । मुहम्मद से लड़ने का अर्थ है–ख़ुदा से लड़ना । अपने को सशक्त और मुसलमानों को निःशक्ति देखकर गर्व न करो । सफलता और विफलता तो अल्लाह के हाथ में है ।

हज़रत उमर मुसलमान होने के बाद ख़ाना-ए-काबा में पहुंचे । विरोधियों से लड़-झगड़ कर नमाज़ पढ़ी । कुफ़्र चकित था और दुखी था कि यह क्या हो गया ?–बुतों का पुजारी उमर एकाएकी ख़ुदा के दरबार में सिर झुकाने लगा । पैग़म्बरे इस्लाम का शत्रु उनका दास बन गया । जिसकी तलवार से हम क़ुरैशियों को बड़ी आशाएं थीं, अब वह तलवार इस्लाम के समर्थन में म्यान से बाहर आया करेगी । ख़त्ताब के बेटे उमर का मुसलमान होना बहुत बड़ी घटना है । ऐसा लग रहा है मानो हम क़ुरैशियों का सीधा बाज़ू टूट गया । उमर से इस नासमझी और भीरुता की हमें कदापि आशा न थी । अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद की दृष्टि और वाणी में न जाने क्या जादू है कि आदमी बस उन्हीं का होकर रह जाता है ।

हज़रत उमर हज़रत हम्ज़ा जैसे वीर और साहसी व्यक्तियों को मुसलमान होता देखकर मक्कावासियों की शत्रुता और बढ़ गयी । उनके क्रोध की अग्नि और भभक उठी । आपस में मश्विरे होने लगे कि अगर इस्लाम की प्रगति इसी प्रकार होती रही तो हमारे देखते ही देखते सारा मक्का अपने पैतृक धर्म से विमुख हो जाएगा और लात और हुबल के लिए एक माथा भी शायद न झुक सकेगा । इसे कैसे भी सहन नहीं किया जा सकता और इसका उपाय शीघ्रातिशीघ्र होना चाहिए ।

सब लोग इकट्ठे होकर अबू तालिब के पास गये । तमतमाये हुए चेहरे, अकड़ी हुई त्योरी और क्रोध से फैली हुई आंखें किसी के गले में तलवार, किसी के हाथ में वर्दी और किसी के कंधे पर लटकी हुई तरकश–दिखाना यह था कि हम लड़ाई के लिए तैयार हैं । हमारे पास शक्ति है, साधन है, जन-शक्ति है, अस्त्र है । हमने अगर युद्धनाद किया तो फिर मक्के की गलियों में ख़ून की नदियां बह जाएंगी । इन लोगों ने बल देकर अबू तालिब से कहा–

'अबू तालिब ! हम आपका आदर करते हैं । यह आदर ही है कि हमने अब तक कोई चुनौती नहीं दी । हम ढील देते रहे कि आपका भतीजा मुहम्मद शायद अपनी हरकतों से रुक जाए, पर उसकी गतिविधियां तो दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही चली जा रही हैं । हम आख़िर कब तक अपने उपास्यों की बुराइयां सुनते रहें । वे देवता जो हमारे आड़े समयों में काम आये, जिन्होंने हम पर उपकार किये हैं क्या अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद के कहने पर हम इनके प्रति अपनी श्रद्धा समाप्त कर दें या अपना संबंध तोड़ दें ? यह नहीं हो सकता । कदापि नहीं हो सकता । अबू तालिब ! देखिये आप समझदार हैं, आप स्वाभिमानी भी हैं, आपको भी ये बातें पसन्द न होंगी । हम तीन शर्तें लेकर आपके पास आये हैं । अपने भतीजे मुहम्मद से कहिये कि वह हमारे बुतों को बुरा-भला कहना छोड़ दे, या अगर यह नहीं हो सकता तो आप मुहम्मद के समर्थन से हाथ खींच लीजिए । उसे हमारे हवाले कर दीजिए या फिर आप हम से लड़ने के लिए तैयार हो जाइये । अबू तालिब, सुनिये ! यह हमारा अंतिम निर्णय है । हम अपने तमाम क़बीलागत विरोधों और पारिवारिक शत्रुताओं के होते हुए भी इस पर सहमत हैं । अच्छी तरह सोच विचार कर लीहिए । आपको इन शर्तों में से कौन-सी शर्त स्वीकार है ? वृद्धावस्था तक पहुंचते-पहुंचते एक

"अल्लाह उस आदमी के साथ दयालुता का मामला करेगा जो क्रय-विक्रय और क़र्ज़ का तक़ाज़ा करने में नरमी और शालीनता बरते।" (हदीस)

Abdul Malik **9845311911**

UNIQUE CREATIONS

Spl. in Unipole & Structure Hoarding

#4, Bldg NO. 29/35, 1st Main Road,
Opp. Masjid-e-Husna, SRK Garden,
Jayanagar East, Bangalore-560041
E-mail : uniquecreations2008@gmail.com

व्यक्ति अनुभवी और सूझ-बूझ वाला हो जाता है । हमें विश्वास है कि आप भी अपनी सूझ-बूझ का प्रमाण देंगे । आपका आदर और सम्मान करने के कारण हमें आपसे सहानुभूति भी है । इस समय हमने बहुत ही सरल और हल्की शर्तें रखी हैं । हमारे युवक तो इन शर्तों से भी सहमत नहीं हैं । उनका तो कहना है कि बनू हाशिम से तत्काल लड़ाई छेड़ी जानी चाहिए । परन्तु हमने उन्हें समझा-बुझाकर इस पर तैयार कर लिया है कि अगर किसी समझौते से काम निकल जाए तो अच्छा है । हम अबू तालिब के पास जाते हैं और उनसे आज खुलकर बातें कर लेंगे ।

अबू तालिब कुरैश की इन चुनौतीपूर्ण बातों को सुनकर सोच में पड़ गये । उन लोगों के जाने के बहुत देर बाद तक वे सोचते रहे कि अजीब चक्कर है । प्यारे भतीजे को इन दुष्टों और विरोधियों के हाथ में देते हुए मन शोकाकुल हो जाता है और मुहम्मद का साथ देता हूं तो हज़ारों व्यक्तियों से लड़ाई मोल लेनी पड़ती है । क्या करूं और क्या न करूं ? ये लोग सचमुच बिगड़ बैठे तो हम गिनती के बनू हाशिम इनकी चुनौती कैसे स्वीकार कर सकेंगे ? एक क्षण में ही हज़ारों तलवारें हमारे सिरों पर टूट पड़ेंगी, बरबाद हो जाएगा हमार घराना । सौ-दो सौ व्यक्ति हों तो उनका मुक़ाबला किया भी जा सकता है, पर हज़ारों व्यक्तियों के वार को सहार ले जाना अति कठिन है । ये तो वे लोग हैं जो छोटी-छोटी बातों पर नंगी तलवारों को सौंत कर मैदान में आ जाते हैं और जब तक धरती रक्त से सन नहीं जाती, लड़ाई बन्द नहीं होती । ये तो उनके पैतृक धर्म और विश्वास का मामला है । इसके लिए तो वे जान पर भी खेल जाएंगे ।

एक संघर्ष था जो अबू तालिब के मन में शुरू हो गया था । कभी चित्र का प्रकाशमान पहलू सामने आता और कभी भयानक और अंधकारमय पहलू !

अबू तालिब ने अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को बुलाकर कहा कि कुरैशी मेरे पास आये थे और ऐसी-ऐसी बात मुझ से कह गये हैं । तुम अपने आप पर दया करो । इतने लोगों से लड़ना मेरी शक्ति से बाहर है । अबू तालिब के कहते ही खुदा के सच्चे नबी के चेहरे पर संतोष, निर्भीकता और विश्वास की लहर दौड़ गयी ।

बोले–आप शायद यह सोच रहे होंगे कि मैं आपका समर्थन पाकर यह काम करता हूं । नहीं, यह बात नहीं है । मेरा समर्थन और मेरी सहायता तो मेरा खुदा कर रहा है । मेरे अल्लाह ने इस काम के लिए मुझे आदेश दिया है । जब तक यह अभियान पूरा न होगा, मैं अपने मार्ग पर बढ़ता जाऊंगा । आपका सहारा अवश्य है और अगर यह न भी हो तो खुदा की सहायता और उसका समर्थन ही मेरे लिए पर्याप्त है । अगर ये लोग मेरे एक हाथ पर सूरज और दूसरे पर चांद भी रख दें तो भी मैं अपना कर्तव्य निभाने से रुकूंगा नहीं ।

इस उत्तर को सुनकर अबू तालिब की आंखों में आंसू तैरने लगे । वे बोले–'ऐ मुहम्मद ! तुम अपना काम करते रहो । काबा के स्वामी की क़सम खाकर कहता हूं कि जब तक मेरी जान में जान है और सांस चल रही है, तब तक ये लोग तुम पर क़ाबू नहीं पा सकते ।

मक्का से कुछ कोस की दूरी पर तायफ़ की बस्ती है, जो अपने हरे-भरे बाग़ीचों, लहलहाते खेतों और मरुद्यानों के लिए अतिप्रसिद्ध है । तायफ़ हिजाज़ देश का कश्मीर है । गर्मी के दिनों में हिजाज़ के धनी-मानी व्यक्ति वहीं वास करते हैं ताकि झुलसा देने वाली हवाओं के थपेड़ों से सुरक्षित रहें । तायफ़ के आसपास की भूमि अति उपजाऊ है । फल और तरकारियां तो विशेष रूप से पैदा होती हैं ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) सत्य प्रचार के लिए पैदल चलकर तायफ़ पहुंचे । तायफ़ के सबसे बड़े सरदार अब्द या लैल के समक्ष इस्लाम का संदेश रखा और इसके बाद सामान्य रूप से उपदेश देते रहे । इन उपदेशों में खुदा की बड़ाई, मूर्ति-पूजा की निंदा, बुराइयों से बचने की ताकीद और अच्छाई का जीवन बिताने का आह्वान था । अति मधुर स्वर, मीठे शब्द, मन को प्रभावित करने वाली वाणी ! पर तायफ़ के लोग मक्का वालों से कम दुष्ट और क्रूर न थे । इन भाग्यहीनों ने अपने गुलामों और छोकरों को आपके विरुद्ध उभारकर पीछे लगा दिया । भरे बाज़ार में गालियां दी गयीं, बुरा-भला कहा गया और फिर पत्थरों की वर्षा की गयी, यहां तक कि हुज़ूर (सल्ल०) के पांव ख़ून में सन गये ।

यह दृश्य बड़ा ही दर्दीला था ! सूरज की आंख से लहू टपका पड़ रहा था । दर व दीवार कांप-कांप जाते थे, धरती

की छाती से हृदय विदारक आहें निकल रही थीं । पेड़-पौधों और पत्थरों की मूक भाषा में फ़रियाद थी । एक ओर विश्व का महानतम व्यक्ति, मानवता का महान उपकारी और खुदा का सच्चा रसूल (सल्ल०) भलाई की बातें बयान कर रहा था, लोगों को अंधेरे से उजाले की ओर बुला रहा था और दूसरी ओर उसके उत्तर में पत्थर बरसाये जा रहे थे । अल्लाह के रसूल घावों के कारण ज़मीन पर गिर-गिर पड़ते, आपके सेवक बांह पकड़-पकड़कर खड़ा करते और चलने लगते, तो वे दुष्ट और अधिक तेज़ी और बेदर्दी के साथ पथराव करते, यहां तक कि हुज़ूर फिर ज़मीन पर बैठ जाते । आपकी यह दशा देखकर तायफ़ के लौंडे तालियां बजा-बजाकर हंसते । हज़रत ज़ैद बिन हारिसा ने अल्लाह के रसूल को बचाने के लिए अपने सीने को ढाल बना दिया था और पत्थरों से उस प्राण न्योछावर कर देने वाले सेवक का सिर फट गया ।

मौत और विनाश के फ़रिश्ते इन्तिज़ार में थे कि अब अल्लाह के रसूल मुहम्मद के मुख से तायफ़ वालों के लिए श्राप निकलता है और अल्लाह का हुक्म पाकर तायफ़ के भू-भाग को हम धुंए की तरह उड़ाये देते हैं । मुहम्मद के लहू की एक-एक बूंद का बदला हम लेकर रहेंगे । एक-एक अपशब्द का उत्तर दिया जाएगा । आद व समूद की क़ौमों से अधिक बुरा अंजाम भुगताकर छोड़ेंगे इन तायफ़ वालों को ! विश्व नायक के अनादर से बढ़कर और कौन-सा अपराध हो सकता है, पर साक्षात् दया पैग़म्बरे इस्लाम के मुख से श्राप का एक शब्द भी न निकला । अपने अल्लाह से इस अत्याचार की आपने तनिक भर भी शिकायत न की । धैर्य और सहनशीलता और अल्लाह पर भरोसे का एक ऐसा आदर्श स्थापित किया, जिसके उदाहरण से अगला-पिछला इतिहास ख़ाली है ।

तायफ़ वालों को अपनी सफलता पर गर्व था कि हम ने अपने उपास्यों के अनादर का आज ख़ूब जी खोलकर बदला ले लिया । वे बहुत निडर हो गये थे और अपने किये पर तनिक भी लज्जित न थे । आपस में कहते थे कि यह कैसा रसूल है कि ज़रा-ज़रा से छोकरे उस का उपहास करते हैं और पत्थर बरसाते हैं, पर उसका खुदा न तो उसे बचाता है और न उसकी सहायता के लिए आसमान से किसी फ़रिश्ते को भेजता है ।

यही उनका भ्रम था । असत्य सदा ही इसी प्रकार के धोखों में मग्न रहता आया है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) तायफ़ से वापस हुए, पांव घायल थे, तायफ़ की ठंडी हवाओं से चोटों में टीस होती थी और रास्ते की धूल ने घावों को और अधिक कष्टकर बना दिया था । फूलों के बदले देह पर चोटों और घावों को लेकर आप मक्का पहुंचे । मक्का के शत्रु आपकी गतिविधियों की ख़बर थे कि आज क्या कहा, किससे भेंट हुई, किस पर क्या प्रभाव हुआ ? तायफ़ की घटना की सूचना पाकर वह अति प्रसन्न हुए और तायफ़ वालों के इस अत्याचार की सराहना की । इनके बड़े-बड़े नवजवान कुरैश को लाज दिलाते कि तुम से अधिक निर्भीक वीर तो तायफ़ के छोकरे निकले जिन्होंने अब्दुल्लाह के बेटे मुहम्मद का भरे बाज़ार में अनादर किया और उनकी बात किसी को सुनने न दी ।

SHATABDI FOUNDATION, GAYA

- Started Shatabdi Public School in 2001 with primary classes, has now developed into a 10+2 CBSE affiliated educational institution with quality education in modern subjects with moral orientation.
- Presently there are around 1000 students who are provided modern teaching facilities. The Foundation also adopts poor/ orphan students
- Under Upwardbound .scheme, another project has been launched for preparation of +2 students to compete in Entrance Test for Engineering, Medical and other professional & technical courses.
- Our immediate needs are ___ Purchase one more school bus, Construction of Prayer Hall & Purchase of 30 Comput-

Ahle Khair Hazrat are Requested to Donate.

Kindly send your cheque/draft in favour of "Shatabdi Foundation, Gaya".

(Prof Z.H.Khan) Chairman — *(Prof M. B. Zaman)* Secretary

Shatabdi Public School, Katari Hill Road, Gaya-823001 (Bihar) INDIA

वास्तविक क्रान्ति दूत

■ डॉ॰ ए॰ सेप्पन

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) के जन्म से पहले अरब में ही नहीं बल्कि संसार के अधिकतर लोगों में मूर्तिपूजा व्याप्त थी । यह मूर्तिपूजा कई रूपों में विद्यमान थी । करोड़ों देवताओं की मूर्तियां पूजी जाती थीं । यहां तक कि मूर्ति कलाएं भी पूज्य मूर्तियां बन जाती थीं । वेश्यावृत्ति, जुआ, डकैती तथा हत्या जैसी बुराइयां व्यापक रूप से फैली हुई थीं और उनको रोकने की वहां कोई व्यवस्था नहीं थी ।

छूतछात वहां बड़ी दृढ़ता से बरता जाता था । जिस तरह जानवर बाज़ार में लाए जाते हैं, उसी तरह दासों को एक-दूसरे से बांध कर बाज़ार में बेचने के लिए लाया जाता था । दासों को गलियों में उसी तरह बेचा जाता था जिस तरह हमारी गलियों में सब्ज़ी बेचने वाले सब्ज़ी बेचते हैं । काले दास अछूत माने जाते थे और साधारण रूप से उनका शोषण नीच कामों के लिए किया जाता था ।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) उस अंधकार युग में पैदा हुए जब लोग बर्बरतापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे । कुछ लोग पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) के विरुद्ध झूठी अफ़वाहें फैलाते थे । परन्तु वह महान पुरुष निर्दोष नैतिक चरित्र का मालिक था । बचपन से ही वह ग़रीबों, यतीमों और वंचितों का दोस्त था । साधारण जनता उसमें गहरा विश्वास रखती थी । वह लोग उसे प्यार से अल-अमीन (अमानतदार) कहते थे । पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) उच्च नैतिक चरित्र के व्यक्ति थे । आप धर्म, धैर्य तथा नैतिकता के प्रतीक थे ।

मनुष्यों के साथ भेदभाव और कमज़ोर बुनियादों पर बरते जा रहे छूतछात ने भारतीय समाज को विनाश के कगार पर पहुंचा दिया है । यद्यपि बहुत-से संत और महात्मा भारत में जन्म ले चुके हैं, परन्तु वह छूतछात को मिटा नहीं सके । भारतीय संत हिन्दू धर्म में रहते हुए सुधार का नारा लगाते रहे । परन्तु वह अपने सुधार कार्य में बुरी तरह असफल रहे । वर्णाश्रम धर्म की धारणा के समक्ष उनके लगन और कड़े परिश्रम का नतीजा घटकर शून्य हो गया ।

सुधारवादी छूतछात के विरुद्ध अपने भाषणों में आग उगलते थे । वह स्वयं को दलितों के मसीहा के रूप में पेश करते थे । परन्तु जब वे अपने घरों में जाते थे तो वे हिन्दू प्रथाओं तथा रीतियों के दास बन जाते थे । इसलिए भारत के हिन्दू नेता छूतछात को मिटाने में सफल नहीं हो सके ।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) के समय में अरब देश आज के भारत की अपेक्षा अधिक कठोर उत्पीड़न झेल रहा था । परन्तु पैग़म्बर मुहम्मद साहब इस्लाम के माध्यम से छूतछात को पूरे अरब प्रायद्वीप से मिटाने में सफल रहे ।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल॰) कर्म के व्यक्ति थे । न तो आप मरने की परवाह करते थे, न तो ख्याति की । आपकी चिंता केवल आदर्शों को स्थापित करने की होती थी । इसलिए आप उस कार्य में सफल रहे जिसमें हमारे महात्मा असफ़ल रहे । आपने अरब से छूतछात को ऐसा मिटाया कि वह फिर कभी वहां सिर न उठा सका, यहां तक कि आपके देहावसान के बाद भी नहीं । आप मात्र अपनी विचारधारा के प्रचारक ही नहीं थे, बल्कि वास्तविक जीवन में उसे उतार

Niyaz Ahmed
Tel. : 2292062 (S)
M. : 98261-29877
Hosiery Centre
Wholeseller
Readymade & Handloom
B/43 Uttar Gangotri, Supela, Bhilai, Durg (C.G.)

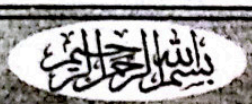

"और अल्लाह की
बन्दगी करो और उसके
साथ किसी को साझी न ठहराओ।
और अच्छा व्यवहार करो माता-पिता
के साथ, नातेदारों, अनाथों, मोहताजों,
नातेदार पड़ोसियों के साथ, और उन
पड़ोसियों के साथ जिनका संबंध न हो,
और पास के व्यक्ति के साथ,
और राह चलने वालों के साथ,
और उनके साथ जो तुम्हारे
अधिकार में हों ।"
(क़ुरआन, 4:36)

USMAN ALI MAKANDAR

SUPER GRANITE AND MARBLE

Plot No-20, Phase-IIIrd B,
Sancole Industrial Estate, Zuari Nagar, GOA

कर दिखाया, फलस्वरूप आपको पूर्ण विजय मिली । मैं यहां पर कुछ घटनाओं का वर्णन करना चाहूंगा जिससे छूआछूत मिटाने में आपकी दिलचस्पी का पता चलेगा । पैग़म्बर की पत्नी ने एक 8 वर्ष का गुलाम ख़रीदा जिसका नाम ज़ैद था । ज़ैद का काम पैग़म्बर के घरेलू कार्यों को करना था । परन्तु बाद में आपने ज़ैद को दासता से मुक्त कर दिया । आपने ज़ैद से कहा–"यदि तुम अपने माता-पिता के पास रहना चाहते हो तो जा सकते हो अन्यथा तुम मेरे साथ रह सकते हो ।" परंन्तु पैग़म्बर के प्यार और हमदर्दी की जो वर्षा उन पर हो रही थी उसमें वह वशीभूत थे, अत: उन्होंने शेष जीवन भी पैग़म्बर के साथ ही गुज़ारना पसन्द किया । ज़ैद के माता-पिता मुद्रा लेकर उन्हें छुड़ाने के लिए आये, परन्तु उनकी खुशी की सीमा न रही जब उन्होंने देखा कि उनका बेटा पहले से ही मुक्त हो चुका है ।

पैग़म्बर ने ज़ैद को गोद में ले लिया । वास्तव में जब हमें पता चलता है कि पैग़म्बर अभागे दासों का इतना अधिक आदर करते हैं तो हम बहुत प्रभावित होते हैं । आपने मुसलमानों को बताया, "ये दास तुम्हारे भाई हैं । जो खाना तुम स्वयं खाते हो वही खाना तुम इन्हें खिलाओ, जो कपड़ा तुम स्वयं पहनते हो वही कपड़ा इन्हें भी पहनाओ । इनकी एक दिन में 70 ग़लतियों को क्षमा करो ।" भारत के अछूत इस महान संत पैग़म्बर के बारे में जानकर चकित हो सकते हैं । छूतछात के उन्मूलन के लिए अरब पैग़म्बर द्वारा उठाये गये क़दमों की प्रशंसा में कई भागों में पुस्तकें लिखी जा सकती है ।

इस अथक प्रयासें के कारण पैग़म्बर मुहम्मद साहब अछूतों और दूसरों को एक साथ बैठाकर एक प्लेट में खिलाने में सफल हुए । आपने एक अछूत दास का छोड़ा हुआ पानी पिया और दूसरों को भी पिलाया । पैग़म्बर का प्रत्येक साथी पूर्व अछूत दासों द्वारा परोसा हुआ खाना बिना संकोच खाता था । जब एक अछूत दास इस्लाम धर्म स्वीकार करता था तो दूसरे मुसलमान तुरंत उससे विवाह संबंध स्थापित कर लेते थे । पैग़म्बर मुहम्मद साहब आने वाले सभी वर्ग के लोगों को एक बंधुत्व में पिरोने में सफल हुए ।

पैग़म्बर मुहम्मद साहब ने पूर्व दास ज़ैद के निकाह में अपनी फूफी की बेटी 'सुन्दर' ज़ैनब को दिया ।

क्या भारत के धार्मिक नेता इस तरह के महान कार्यों को लागू करने का स्वप्न देख सकते हैं जिन्होंने छूतछात उन्मूलन का रास्ता साफ़ किया । छूतछात के नाम पर जो बर्बरतापूर्ण व्यवहार 1400 वर्ष पहले अरब में होता था वह हम आज के भारत में जो कुछ देख रहे हैं उससे अधिक भयानक था । पैग़म्बर को चारों तरफ़ से विरोध तथा निंदा अभियान का मुक़ाबला करना पड़ा । यह उस समय एक ख़तरनाक स्थिति थी, परन्तु पैग़म्बर मुहम्मद साहब ने छूतछात तथा दासता के विरुद्ध संघर्ष में तमाम समस्याओं का बहादुरी से जमकर मुक़ाबला किया ।

बिलाल नाम के एक काले दास को एक चमत्कारी व्यक्ति के बारे में पता चला कि वह अछूतों को गले लगाता है, दासों को मुक्त करता है और अपने खाने में अछूतों को

प्रो॰ मुहम्मद क़मरुज़्ज़मा

9826809922
9826689853

पापुलर ट्रेवल्स

लग्जरी बस सेवा 2/2 (स्लीपर) के लिए सम्पर्क करें ।

अम्बिकापुर से बिलासपुर	रात्रि	23:20
अम्बिकापुर से रायपुर	प्रात:	03:00
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:30
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:25
अम्बिकापुर से डाल्टेनगंज	रात्रि	22:30
मननगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	19:10
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	05:00
अम्बिकापुर से चीरमीरी	प्रात:	06:30
अम्बिकापुर से मननगढ़	संध्या	16:10
रायगढ़ से डाल्टेनगंज	रात्रि	21:40

राम मंदिर के पास, अम्बिकापुर, सरगुजा (छत्तीसगढ़)

8 करोड़ मराठी भाषा जानने वालों तक
इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने के लिए
क़ुरआन का अनुवाद, अहादीस,
पैग़म्बर चरित्र (सीरते-नबी) और
ग़ैर-मुस्लिम
भाइयों की ग़लतफ़हमी दूर करने
के लिए 200 इस्लामी मराठी पुस्तकें और
20 फोल्डर्स उपलब्ध हैं ।
पुस्तकों की सूची बिना मूल्य मंगवाएं ।

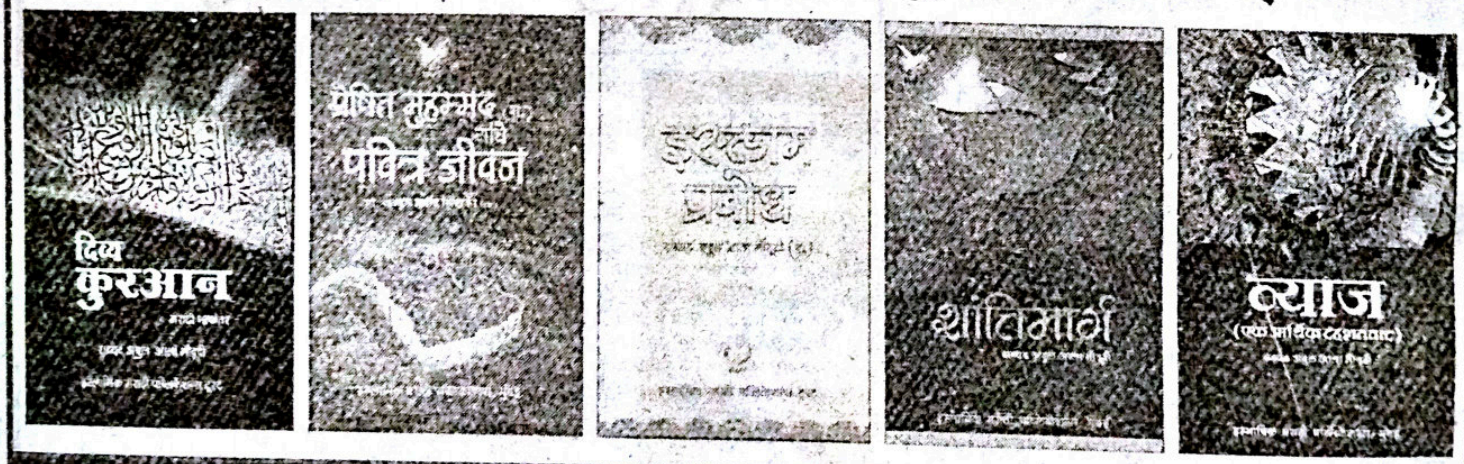

ISLAMIC MARATHI PUBLICATIONS TRUST

4, Hamid Bldg., 96, Hafiz A. B. Marg, Mominpura, Mumbai - 11
Tel.: 23018387, 23082820 Fax : 23052002 Cell.: 9224599910
Website : www.islamicmarathipublications.com

भी साथ लेता है तो बिलाल में इस मुक्तिदाता से मिलने की जिज्ञासा पैदा हुई । परन्तु उनके मालिक ने उसे मिलने की आज्ञा नहीं दी । उनका मालिक इस्लाम के पैग़म्बर का घोर विरोधी था । जब उसे पता चला कि बिलाल इस्लाम से प्यार करते हैं तो ग़रीब दास को निर्दयतापूर्वक यातना दी गयी । बिलाल को जलती हुई रेत पर फेंक दिया गया और एक बड़ा पत्थर सीने पर रख दिया गया । बच्चों को उन पर पत्थर फेंकने के लिए उकसाया गया । कभी-कभी ग़रीब बिलाल को ऊंट से बांध दिया जाता था जो उनको गर्म रेत पर खींचता था । कई दिनों के लिए उनको खाना और पानी से दूर रखा जाता । परन्तु अमानवीय यातनाओं का शिकार होने के बावजूद, बिलाल का इस्लाम से प्रेम कम नहीं हुआ ।

पैग़म्बर मुहम्मद साहब को बिलाल की दर्दनाक दशा जानकर बहुत कष्ट होता । आपने अपने क़रीबी दोस्त अबू बक्र (रज़ि॰) से कहा कि वह बिलाल को उनके मालिक से ख़रीद लें । उनका मालिक बहुत लालची था । उसने बिलाल को बेचने के लिए लंबी-चौड़ी रक़म मांगी । उदार अबू बक्र (रज़ि॰) ने मांगी हुई रक़म अदा करके बिलाल को उनके मालिक के चंगुल से आज़ाद करा लिया । बिलाल ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया और स्वतंत्रत हो गये और दासता से पूर्णत: मुक्म हो गये । वह पैग़म्बर के विश्वस्त मित्र हो गये । इस्लाम के इतिहास में पहली बार मुसलमानों को पांचों वक़्त नमाज़ में बुलाने के लिए अज़ान कहने का अद्वितीय सौभाग्य एक पूर्व काले दास बिलाल को प्राप्त हुआ । जब बिलाल नमाज़ के लिए अज़ान देते तो पैग़म्बर भी मस्जिद की ओर दौड़ पड़ते । आज भी जब अज़ान दी जाती है तो ग़रीब तथा अमीर सभी मुसलमान मस्जिद की ओर दौड़ पड़ते हैं, जिस अज़ान का उद्घाटन करने का सौभाग्य 1400 वर्ष पूर्व बिलाल को प्राप्त हुआ था ।

पैग़म्बर के जीवनकाल में अछूत दासों, निर्धनों, यतीमों तथा दूसरे कमज़ोरों की बड़ी संख्या ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया । इस्लाम वह पहला धर्म है जो दासता तथा छूतछात उन्मूलन के लिए स्थापित किया गया । हिन्दू धर्म दलितों को मंदिर प्रवेश की अनुमति नहीं देता हालांकि दलित लोग स्वयं को जाने-अनजाने हिन्दू कहते हैं । हिन्दू देवता लोगों को उनके पद तथा सामाजिक स्तर के अनुसार अपनी पूजा के लिए आह्वान करते हैं । परन्तु हिन्दू देवता प्रभाव रखने वालों का आदर करते हैं और सत्कारपूर्वक उन्हें मंदिरों में बुलाते हैं । परन्तु वही हिन्दू देवता दलितों तथा कमज़ोर वर्गों को मंदिर द्वार पर रोक कर उन्हें ज़ब्त कर लेते हैं । परन्तु इस्लाम में कोई भी व्यक्ति जो शारीरिक रूप से स्वच्छ हो वह मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ सकता है । मुसलमान लोगों को नमाज़ के लिए बुलाते हैं और उनका गर्मजोशी से स्वागत करते हैं । मस्जिद के अन्दर धर्म, जाति, धन तथा विश्वास के आधार पर भेदभाव नहीं है । पहली पंक्ति में नमाज़ पढ़ रहे ग़रीब का पैर दूसरी पंक्ति में नमाज़ पढ़ रहे शासक के सिर से छू सकता है । परन्तु इस पर उसे सज़ा नहीं दी जा सकती । इस्लाम में केवल सर्वशक्तिमान के लिए ही अदब और पूजा विशेष है ।

यही कारण है कि इस्लाम बहुत तेज़ी से फैला, आज जिसके अन्दर लगभग दो अरब इन्सान आते हैं, यद्यपि आपके प्रारंभिक काल के 13 वर्षों में केवल 40 लोग ही मुसलमान हुए थे । पैग़म्बर का मिशन सदियों से चली आ रही मनुष्य पर मनुष्य की दासता के विरुद्ध क्रांति था । यह क्रांति पैग़म्बर के बाद भी रुकी नहीं । इसकी ज्वाला छूतछात और दासता के दैत्य को संसार के कोने-कोने में जलाती है ।

POSTAL LIBRARY

जीवन ज्योति केन्द्र

पोस्टल लाइब्रेरी



Bainy Singh Ki Talaiya
Gohalpur, Jabalpur-482002
Mob. : 9300929747, 9300101373

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

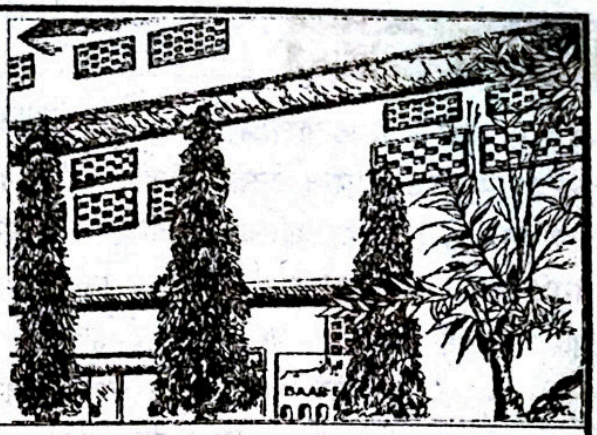

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा ● 24 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा ● 6 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई : 6 बैच 70 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 3 बैच 40 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2010 ई॰ तक 63 अनाथ बच्चियों और 37 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 13 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 120 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 8000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 73000/- रुपये ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है। ● इदारा में खुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेनें का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है।

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM में अपनी रक़म भेज सकते हैं।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

.....पता.....

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS' ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA

☎ 0631-2734437 ● Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

BANK A/C NO.: 7752 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

CORE BANKING A/C NO.: 300402010007752

संस्थापक महासचिव

इक़बाल अहमद ख़ां

विश्वसनीय व्यक्तित्व

■ के॰ एस॰ रामकृष्ण राव

इस्लाम का राजनैतिक और आर्थिक व्यवस्था से सीधा संबंध नहीं है, बल्कि यह संबंध अप्रत्यक्ष रूप में है और जहां तक राजनैतिक और आर्थिक मामले इन्सान के आचार-व्यवहार को प्रभावित करते हैं, उस सीमा में दोनों क्षेत्रों में निस्संदेह उसने कई अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादित किये हैं। प्रोफ़ेसर मेसिंगनन के अनुसार 'इस्लाम दो प्रतिकूल अतिशयों के बीच संतुलन स्थापित करता है और चरित्र निर्माण का, जो कि सभ्यता की बुनियाद है, सदैव ध्यान रखता है ।' इस उद्देश्य को प्राप्त करने और समाज-विरोधी तत्वों पर क़ाबू पाने के लिए इस्लाम अपने विरासत के क़ानून और संगठित एवं अनिवार्य ज़कात की व्यवस्था से काम लेता है। और एकाधिकार (इजारादारी), सूदख़ोरी, अप्राप्त आमदनियों व लाभों को पहले ही निश्चित कर लेने, मंडियों पर क़ब्ज़ा कर लेने, ज़ख़ीराअंदोज़ी बाज़ार का सारा सामान ख़रीद कर क़ीमतें बढ़ाने के लिए कृत्रिम अभाव पैदा करना, इन सब कामों को इस्लाम ने अवैध घोषित किया है । इस्लाम में जुआ भी अवैध है । ज़बकि शिक्षा-संस्थाओं, इबादतगाहों तथा चिकित्सालयों की सहायता करने, कुएं खोदने, यतीमख़ाने स्थापित करने को पुण्यतम काम घोषित किया । कहा जाता है कि यतीमख़ानों की स्थापना का आरंभ पैग़म्बरे इस्लाम की शिक्षा से ही हुआ । आज का संसार अपने यतीमख़ानों की स्थापना के लिए उसी पैग़म्बर का आभारी है, जो कि खुद यतीम था । कारलायल पैग़म्बर मुहम्मद के बारे में अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहता है–"ये सब भलाइयां बताती हैं कि प्रकृति की गोद में पले-बढ़े इस मरुस्थलीय पुत्र के हृदय में, मानवता, दया और समता के भाव का नैसर्गिक वास था ।"

एक इतिहासकार का कथन है कि किसी महान व्यक्ति की परख तीन बातों से की जा सकती है–

1. क्या उसके समकालीन लोगों ने उसे साहसी, तेजस्वी और सच्चे आचरण का पाया ?

2. क्या उसने अपने युग के स्तरों से ऊंचा उठने में उल्लेखनीय महानता का परिचय दिया ?

3. क्या उसने सामान्यत: पूरे संसार के लिए अपने पीछे कोई स्थायी धरोहर छोड़ी ?

इस सूची को और लंबा किया जा सकता है, लेकिन जहां तक पैग़म्बर मुहम्मद का संबंध है वे जांच की इन तीनों कसौटियों पर पूर्णत: खरे उतरते हैं । अंतिम दो बातों के संबंध में कुछ प्रमाणों का पहले ही उल्लेख किया जा चुका है ।

इन तीन कसौटियों में पहली है, क्या पैग़म्बरे इस्लाम को आपके समकालीन लोगों ने तेजस्वी, साहसी और सच्चे आचरण वाला पाया था ?

बेदाग़ आचरण

ऐतिहासिक दस्तावेज़ें साक्षी हैं कि क्या दोस्त, क्या दुश्मन, हज़रत मुहम्मद के सभी समकालीन लोगों ने जीवन के सभी मामलों व सभी क्षेत्रों में पैग़म्बरे इस्लाम के उत्कृष्ट गुणों, आपकी बेदाग़ ईमानदारी, आपके महान नैतिक सद्‌गुणों तथा आपकी अबाध निश्छलता और हर संदेह से मुक्त आपकी विश्वसनीयता को स्वीकार किया है । यहां तक कि यहूदी और वे लोग जिनको आपके संदेश पर विश्वास नहीं था, वे भी आपको अपने झगड़ों में पंच या मध्यस्थ बनाते थे, क्योंकि उन्हें आपकी निरपेक्षता पर पूरा यक़ीन था । वे लोग भी जो आपके संदेश पर ईमान नहीं रखते थे, यह कहने पर विवश थे–"ऐ मुहम्मद, हम तुमको झूठा नहीं कहते, बल्कि उसका इन्कार करते हैं जिसने तुमको किताब दी तथा जिसने तुम्हें रसूल बनाया ।"

वे समझते थे कि आप पर किसी (जिन्न आदि) का असर है, जिससे मुक्ति दिलाने के लिए उन्होंने आप पर सख़्ती भी की । लेकिन उनमें जो बेहतरीन लोग थे, उन्होंने देखा कि आपके ऊपर एक नयी ज्योति अवतरित हुई है और वे उस ज्ञान को पाने के लिए दौड़ पड़े । पैग़म्बरे इस्लाम की जीवनगाथा की यह विशिष्टता उल्लेखनीय है कि आपके निकटतम रिश्तेदार, आपके प्रिय चचेरे भाई, आपके घनिष्ट मित्र, जो आपको बहुत निकट से जानते थे, उन्होंने आपके पैग़ाम की सच्चाई को दिल से माना और इसी प्रकार आपकी पैग़म्बरी की सत्यता को भी स्वीकार किया ।

पैग़म्बर मुहम्मद पर ईमान ले आने वाले ये कुलीन शिक्षित एवं बुद्धिमान स्त्रियां और पुरुष आपके व्यक्तिगत जीवन से भली-भांति परिचित थे । वे आपके व्यक्तित्व में

INFORMATION BROCHURE



- Almanar Social Service a registered society. Bridging the gap between giving and receiving ends.



- Working in the field of education, health and employment generation.
- A unique charitable institution in Jharkhand.



- Projects in progress : Model primary school, Health

المنار سوشل سروس

Almanar Social Service

(An NGO registered societies Act XXI of 1860

President
Abul Arif
(M.Sc.)

Office : Jharna Road, Near Eidgaah Azadnagar,
Jamshedpur-832110
Tel. : +91-657-6542806, +91-9279149654

Secretary
Haider Imam
(B.com. PG Dip)

Our Bank A/c No. 29601010007675
CANARA BANK
Kabir Memorial School, Zakir Nagar, Mango, Jamshedpur (Jharkhand)

अगर धोखेबाज़ी और फ्रॉड की ज़रा-सी झलक भी देख पाते या आप में धनलोलुपता देखते या आप में आत्मविश्वास की कमी पाते तो आपके चरित्र-निर्माण, आत्मिक जागृति तथा समाजोद्धार की सारी आशाएं ध्वस्त होकर रह जातीं ।

इसके विपरीत हम देखते हैं कि अनुयायियों की निष्ठा और आपके प्रति उनके समर्थन का यह हाल था कि उन्होंने स्वेच्छा से अपना जीवन आपको समर्पित करके आपका नेतृत्व स्वीकार कर लिया । उन्होंने आपके लिए यातनाओं और ख़तरों को वीरता और साहस के साथ झेला, आप पर ईमान लाए, आपका विश्वास किया, आपकी आज्ञाओं का पालन किया और आपका हार्दिक सम्मान किया और यह सब कुछ उन्होंने दिल दहला देने वाली यातनाओं के बावजूद किया तथा सामाजिक बहिष्कार से उत्पन्न घोर मानसिक यंत्रणा को शांतिपूर्वक सहन सहन किया । यहां तक कि इसके लिए उन्होंने मौत तक की परवाह नहीं की । क्या यह सब कुछ उस हालत में भी संभव होता यदि वे अपने नेता में तनिक भी भ्रष्टता या अनैतिकता पाते ?

पैग़म्बर से अमर प्रेम

आरंभिक काल में इस्लाम स्वीकार करने वालों के ऐतिहासिक क़िस्से पढ़िए तो इन बेक़सूर मर्दों और औरतों पर ढाये गये ग़ैर इन्सानी अत्याचारों को देखकर कौन-सा दिल है जो रो न पड़ेगा ? एक मासूम औरत सुमैया को बेरहमी के साथ बरछे मार-मारकर हलाक कर डाला गया । एक मिसाल यासिर की भी है, जिनकी टांगों को दो ऊंटों से बांध दिया गया और फिर उन ऊंटों को विपरीत दिशा में हांका गया । ख़ब्बाब बिन अर्स को धधकते हुए कोयलों पर लिटाकर निर्दयी ज़ालिम उनके सीने पर खड़ा हो गया, ताकि वे हिल-डुल न सकें, यहां तक कि उनकी खाल जल गयी और चर्बी पिघलकर निकल पड़ी । और ख़ब्बाब बिन अदी के गोश्त को निर्ममता से नोच-नोचकर तथा उनके अंग काट-काटकर उनकी हत्या की गयी । इन यातनाओं के दौरान उनसे पूछा गया कि क्या अब वे यह न चाहेंगे कि उनकी जगह पर पैग़म्बर मुहम्मद होते ? (जो कि उस वक़्त अपने घर वालों के साथ अपने घर में थे) तो पीड़ित ख़ब्बाब ने ऊंचे स्वर में कहा कि पैग़म्बर मुहम्मद को एक कांटा चुभने की मामूली तकलीफ़ से बचाने के लिए भी वे अपनी जान, अपने बच्चों एवं परिवार, अपना सब कुछ कुरबान करने के लिए तैयार हैं । इस तरह के दिल दहलाने वाले बहुत-से वाक़िये पेश किये जा सकते हैं, लेकिन ये सब घटनाएं आख़िर क्या सिद्ध करती हैं ? ऐसा कैसे हो सका कि इस्लाम के इन बेटे और बेटियों ने अपने पैग़म्बर के प्रति केवल निष्ठा ही नहीं दिखायी, बल्कि उन्होंने अपने शरीर, हृदय और आत्मा का नज़राना उन्हें पेश किया ? पैग़म्बर मुहम्मद के प्रति उनके निकटतम अनुयायियों की यह दृढ़ आस्था और विश्वास, क्या उस कार्य के प्रति, जो पैग़म्बर मुहम्मद के सुपुर्द किया गया था, उनकी ईमानदारी, निष्पक्षता तथा तन्मयता का अत्यंत उत्तम प्रमाण नहीं है ?

उच्च सामर्थ्यवान अनुयायी

ध्यान रहे कि ये लोग न तो निचले दर्जे के लोग थे और न कम अक़्ल वाले । आपके मिशन के आरंभिक काल में जो लोग आपके चारों ओर जमा हुए वे मक्का के श्रेष्ठतम लोग थे, उसके फूल और मक्खन, ऊंचे दर्जे के, धनी और सभ्य लोग थे । इनमें आपके ख़ानदान और परिवार के क़रीबी लोग भी थे जो आपकी अंदरूनी और बाहरी ज़िन्दगी से भली-भांति परिचित थे । आरंभ के चारों ख़लीफ़ा भी, जो कि महान व्यक्तित्व के मालिक हुए, इस्लाम के आरंभिक काल ही में इस्लाम में दाख़िल हुए थे ।

'इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' में उल्लिखित है–

"समस्त पैग़म्बरों और धार्मिक क्षेत्र के महान व्यक्तित्वों में मुहम्मद सबसे ज़्यादा सफल हुए हैं ।"

मक़सूद भाई मोबाइल : 9406090786

मारूफ़
शू पैलेस
जी०ई० रोड, बस स्टैंड, बी०एम०वाई०
चरौदा, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788-6534786

एस०के० इंटरप्राइजेज
होल सेल शू मर्चेन्ट
अलंकार कम्पलेक्स के निकट
कैम्प-2, भिलाई, (छत्तीसगढ़)
फ़ोन : 0788 6535786

बरबादी है प्रत्येक उलाहना देने वाले,
एवं त्रुटि खोजने वाले के लिए। जिसने धन समेटा और
उसे गिनता रहा। वह समझता है कि उसका धन उसे सदैव
स्थायी रखेगा। कदापि नहीं, निश्चय ही उसे हु-त-मह
(चूर-चूर कर देने वाली) में फेंका जाएगा।
और तुम्हें क्या मालूम हु-त-मह क्या है?
(वह) अल्लाह की ऐसी दहकती हुई अग्नि है,
जो हृदयों तक पहुंच जाती है। उसे (नरक वालों पर)
बंद कर दिया जाएगा। (जहां वे) लंबे-लंबे स्तंभों में
(जकड़े हुए) पड़े होंगे।

Spice It up with SEA FOOD

Bee Ye Yem

ARIF: 094 2244 2824 MOHSEN: 09422063773 MUSHTAQ: 09422063989
SHAHID: 09822734724

Wholesale Fish Market, Margao-GOA

TeL: 0832-2715555, E-mail: Beeyeyemstar@g-mail.com

HYDER : 09845131893 B. ABBUSHEB : 09902453663
A. ALEEM : 09448348196

MADHUR SANDESH CENTRE

AIMS & OBJECTIVES

- To render utmost efforts for establishment of virtues and eradication of all evils.
- To establish Islamic libraries, reading rooms and postal libraries.
- To obtain, publish and distribute books, journals, periodicals, etc. to disseminate knowledge about Islam.
- To set up students information and career guidance bureau.
- To manage, maintain, make, build Madrasas, Masjids, and schools, etc.
- To work for communal Harmony and moral upliftment.
- To aim and work for improving human relations and develop better understanding of Islam, and other world religions.
- To spread the message of Quran.

MADHUR SANDESH CENTRE

301, FX Towers, Opp. M.P.T. Hall,
Vasco-Da-Gama, Goa,India
Pin Code : 403 802

बालवीथी जानवरों की कुछ क्षमता

भूकंप आने या ज्वालामुखी के फटने से पहले कुत्ते-बिल्लियों का व्यवहार बदल जाता है । वे खाना-पीना छोड़ देते हैं । बिल्लियां अपने बच्चों को लेकर जगह छोड़ने लगती हैं । अन्य पालतू पशु भी प्राकृतिक आपदा की आहट पहचान कर असहज हो जाते हैं । घोड़ों के झुंड में भगदड़ जैसी स्थिति बन जाती है । अपने असहज व्यवहारों से ये जीव मूसलाधार बारिश, तूफ़ान, भूकंप आदि आपदाओं के आने का संकेत देते हैं ।

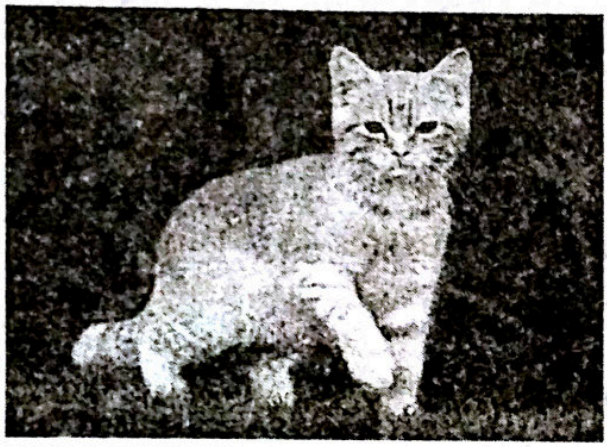

पशु-पक्षियों का यह व्यवहार अब पहेली नहीं रहा । हाल ही में हुए एक अध्ययन से यह पता चला है कि इन जीवों में हवा में उपस्थित विद्युत आवेश को भांपने की अद्‌भुत क्षमता होती है । यदि रात के समय पक्षियों की चहचहाहट तेज़ हो जाए तो इसे भी अनिष्ट का संकेत माना जाता है ।

सांपों में भी कई ख़ूबियां होती हैं । 'पिट वाइपर' नामक सांप की विशेषता है कि वह एक डिग्री सेल्सियस के हज़ारवें हिस्से के बराबर हुए तापमान के फ़र्क़ को एक सेकेंड के हज़ारवें हिस्से से भी कम समय में पकड़ लेता है ।

मुद्रक एवं प्रकाशक ख़लील अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट, गली क़ासिम जान, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से मुद्रित ।
फोन: 011-26949430
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णत: प्रतिबंधित है ।

With best compliments from:
Ph: 0651-2330144, 2330604
Mo. 09334706965
Azad Pharma
formerly
Azad Pharmacy
Timing :
10:00 a.m. to 09:00 p.m.
Sunday Closed
B-7, Sainik Market, Main Road, Ranchi-834001 (Jharkhand)

Required Doctors

(Urgently)

FOR WELL KNOWN AND WELL EQUIPPED 30 BEDDED HOSPITAL,

1. Female Gynaecologist. (M.D/M.S/DNB/DGO)
2. Paediatrician (M.D/DNB/DCH)
3. Physician (M.D/DNB)
4. Orthopaedic Surgeon (M.S/DNB)
5. Duty Doctors (MBBS)

Salary offered : Negotiable

FACILITIES AVAILABLE :

★ ICU,
★ CCU;
★ NICU,
★ Ortho Operation Theatre,
★ General OPeration Theatre,
★ Minor Operation Theatre,
★ 24/7 Well Equipped Lab and Pharmacy and X-Ray Unit,
★ Casualty and
★ Labour Theatre.

Welfare Hospital

(A unit of Bhatkal Health Care Ltd.)
Post Box No. 19, Sultan Street, Bhatkal, Karnataka-581 320
Contact : +91-9980564282, +91-9902105448

Sameer Hotel Supplies
Distributor For: Diversey Cleaning Solution SULO (Germany)
S-1, Mapusa Trade Centre, Morod, Mapusa - Goa Ph: 2262192, 2253201, 2250121 F: 2253626

Posted on 20-21 April 2011
May 2011
E-mail: kantimonthly@hotmail.com
Publishing Date: 18.04.2011

हिन्दी साहित्यों की साहित्यिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2009-2011
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2009-11

TABREZ
Cell : 9890183311

ZARINA ENTERPRISES





COMMUNICATION CENTRE

Recharge Vouchers, Mobiles, Xerox, Fax,
Computer Typing, Stationery, SIM Cards

ELECTRICAL GOODS

We Undertake all Types of Electrical Wiring Works

Next to Bandekar Petrol Pump, NH17, Karaswada,
Mapusa-GOA, Tele-Fax : (0832) 2258393